गरवी गुजरात

RNI No. GUJHIN/2011/39228

GARVI GUJARAT

गरवी गुजरात

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 15
अंक : 204
दि. 25.11.2025,
मंगलवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

EDITOR : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH Regd. Office: TF-01, Nanakram Super Market,Ramnagar,Sabarmati, Ahmedabad-380 005. Gujarat, India.

Phone : 90163 33307 (M) 93283 33307, 98253 33307 • Email : garvigujarat2007@gmail.com • Email : garvigujarat2007@yahoo.com • Website : www.garvigujarat.co.in

“सोनम वांगचुक की हिरासत पर सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई स्थगित, 8 दिसंबर तक टली केस की अगली सुनवाई”

(जीएनएस)। नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार (24 नवंबर) को जलवायु कार्यकर्ता और लद्दाख के नवाचारक सोनम वांगचुक की हिरासत मामले में सुनवाई स्थगित कर दी। कोर्ट ने वांगचुक की पत्नी गीतांजलि जे. अंगमो की याचिका पर फैसला करने से पहले अतिरिक्त समय मांगा और अगली सुनवाई की तारीख 8 दिसंबर निर्धारित की। याचिका में आरोप लगाया गया है कि वांगचुक की राष्ट्रीय सुरक्षा कानून (NSA) के तहत हिरासत अवैध है और उनके मौलिक अधिकारों का उल्लंघन करती है।

सुप्रीम कोर्ट की बेंच—जस्टिस अरविंद कुमार और जस्टिस एनवी अंजारिया—ने सुनवाई टालते हुए केंद्र और लद्दाख प्रशासन की ओर से पेश सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता को याचिकाकर्ता के जवाब पर विचार करने का समय दिया। इस मामले में कोर्ट ने 29 अक्टूबर को संशोधित याचिका पर केंद्र और लद्दाख प्रशासन से जवाब मांगा था।

गीतांजलि की याचिका में कहा गया है कि हिरासत आदेश पुरानी एफआईआर, अस्पष्ट आरोपों और काल्पनिक दावों पर आधारित है और इसका हिरासत के कथित आधार से कोई संबंध नहीं है। उनका तर्क है कि यह सत्ता का मनमाना प्रयोग है, जो संवैधानिक स्वतंत्रता और उचित कानूनी प्रक्रिया के अधिकारों का उल्लंघन करता है। याचिकाकर्ता का कहना है कि कोर्ट के पास इस हिरासत आदेश को रद्द करने का पूरा अधिकार है। गीतांजलि ने यह भी कहा कि यह हास्यास्पद है कि सोनम वांगचुक, जिन्हें तीन दशकों से शिक्षा, नवाचार और पर्यावरण संरक्षण में उनके योगदान के लिए राज्य, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान प्राप्त है, उन्हें अचानक निशाना बनाया जा रहा है। याचिका में स्पष्ट किया

गया कि 24 सितंबर को लेह में हुई हिंसा के लिए वांगचुक के कार्यों या बयानों को जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता। वांगचुक ने स्वयं सोशल मीडिया पर हिंसा की निंदा की और कहा कि यह लद्दाख की पांच साल की शांतिपूर्ण कोशिशों को विफल कर देगी। सोनम वांगचुक को 26 सितंबर को एनएसए के तहत हिरासत में लिया गया था। यह कदम उस समय उठाया गया जब लद्दाख को राज्य का दर्जा और छठी अनुसूची का दर्जा देने की मांग को लेकर हिंसक विरोध प्रदर्शन हुए। इन प्रदर्शनों में चार लोगों की मौत हो गई और 90 से अधिक लोग घायल हुए। सरकार ने वांगचुक पर हिंसा भड़काने का आरोप लगाया। फिलहाल वांगचुक राजस्थान के जोधपुर जेल में बंद हैं। राष्ट्रीय सुरक्षा कानून (NSA) केंद्र और राज्यों को यह अधिकार देता है कि वे किसी व्यक्ति को भारत की सुरक्षा के लिए हानिकारक कृत्यों से रोकने के लिए हिरासत में लें। हिरासत की अधिकतम अवधि 12 महीने होती है, हालांकि इसे पहले भी रद्द किया जा सकता है। विशेषज्ञों का कहना है कि वांगचुक की हिरासत और एनएसए के दुरुपयोग को लेकर देशभर में बहस तेज हो सकती है। कोर्ट की अगली सुनवाई अब 8 दिसंबर को होगी, और इसे लेकर सभी पक्ष अपनी दलीलें तैयार कर रहे हैं। इस मामले ने न केवल कानून, सुरक्षा और मानवाधिकारों पर सवाल खड़े कर दिए हैं, बल्कि यह देश में नवाचार, शिक्षा और पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में कार्यरत नागरिकों की सुरक्षा और स्वतंत्रता पर भी नई बहस खड़ी कर सकता है। सोनम वांगचुक की हिरासत मामले ने यह स्पष्ट कर दिया है कि जब सुरक्षा कानूनों और नागरिक स्वतंत्रता का टकराव होता है, तो न्यायपालिका की भूमिका कितनी महत्वपूर्ण हो जाती है। 8 दिसंबर की सुनवाई तक पूरे देश की निगाहें सुप्रीम कोर्ट पर टिकी रहेंगी, जहां यह तय होगा कि क्या हिरासत आदेश वैध है या इसे रद्द किया जाएगा।

धर्मेंद्र के निधन पर देशभर में शोक की लहर: नेताओं ने कहा—‘भारतीय सिनेमा का एक युग समाप्त हो गया’

(जीएनएस)। भारतीय सिनेमा के सबसे चमकते सितारों में शुमार और ‘ही-मैन’ के नाम से मशहूर धर्मेंद्र के निधन की ख़बर ने पूरे देश को गहरे शोक में डुबो दिया। 89 वर्ष की आयु में मुंबई के ब्रीच कैंडी अस्पताल में उन्होंने अंतिम सांस ली। जैसे ही उनके निधन की पुष्टि हुई, फिल्म जगत, राजनीतिक दुनिया और उनके करोड़ों प्रशंसकों के बीच शोक की लहर दौड़ पड़ी। धर्मेंद्र केवल एक अभिनेता नहीं थे—वह भारतीय फ़िल्म इतिहास के उन जीवित अध्यायों में से आखिरी पन्नों में थे, जिनकी कला, व्यक्तित्व और जीवन शैली ने पीढ़ियों को प्रभावित किया।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने उनकी विदाई को ‘इंडियन सिनेमा में एक युग का अंत’ बताया। उन्होंने सोशल मीडिया पर लिखा कि धर्मेंद्र एक ऐसे कलाकार थे जो हर भूमिका में गहराई, ईमानदारी और अद्भुत चार्म लेकर आते थे। मोदी ने कहा कि धर्मेंद्र की सादगी और विनम्रता ने हर युवा कलाकार को एक सीख दी और उनके जाने से सिनेमाई दुनिया का एक स्तंभ गिर गया। प्रधानमंत्री ने कहा कि दुख के इस क्षण में उनकी संवेदनाएँ धर्मेंद्र के परिवार और करोड़ों प्रशंसकों के साथ हैं।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने भी उनके निधन को भारतीय सिनेमा की अपूरणीय क्षति बताते हुए कहा कि धर्मेंद्र जैसा बहुमुखी अभिनेता दशकों में एक बार जन्म लेता है। उन्होंने याद दिलाया

कि किस तरह धर्मेंद्र ने अपने करियर में कई यादगार किरदार निभाए और अपनी सहजता से हर भूमिका में जान डाल दी। राष्ट्रपति ने उन्हें ऐसा कलाकार कहा जिसने हिंदी सिनेमा को ऊँचाइयों पर पहुँचाने में बेहद महत्वपूर्ण योगदान दिया।

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने लिखा कि धर्मेंद्र ने अपने जबरदस्त अभिनय और करिश्माई व्यक्तित्व से छह दशकों तक देशवासियों के दिलों पर शासन किया। उन्होंने इस बात की प्रशंसा की कि एक सामान्य परिवार से आने वाले धर्मेंद्र ने फिल्म जगत में अपनी जगह स्वयं बनाई और आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा बन गए। शाह ने ईश्वर से उनके परिवार को इस दुख को सहन करने की शक्ति देने की प्रार्थना की।

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने कहा कि भारतीय फिल्म जगत ने आज एक अनमोल सितारा खो दिया। उन्होंने याद किया कि 2012 में पद्मभूषण से सम्मानित धर्मेंद्र ने अपनी अदाकारी और सरल जीवन से दर्शकों के दिलों में अमिट छाप छोड़ी। राहुल गांधी ने भी गहरा शोक व्यक्त करते हुए लिखा कि धर्मेंद्र का सात दशकों का योगदान भारतीय सिनेमा के इतिहास का स्वर्णिम अध्याय है, जिसे सदियों तक याद रखा जाएगा। गांधी ने कहा कि धर्मेंद्र ने अभिनय ही नहीं, बल्कि अपने मानवीय व्यक्तित्व से भी लोगों का दिल जीता।

केंद्रीय मंत्री जे.पी. नड्डा ने भी उन्हें भारतीय कला जगत का स्तंभ बताते हुए कहा कि उनकी विदाई से सिनेमा का एक चमकता सितारा सदा के लिए खो गया। अखिलेश यादव ने धर्मेंद्र के व्यक्तित्व को याद करते हुए कहा कि उनका सादगी भरा, जमीन से जुड़ा स्वभाव और सहज अभिनय सदैव दर्शकों और कलाकारों को प्रेरित करता रहेगा।

धर्मेंद्र केवल फिल्मों के हीरो नहीं थे—वह उस दौर की आत्मा थे जिसने हिंदी सिनेमा को भव्यता, भावनाओं और दर्शकों के दिलों को छू लेने वाली सरलता दी। ‘शोले’ के वीरू से लेकर ‘चुपके-चुपके’ के प्रोफेसर परिमल तक, ‘सत्यकाम’ के आदर्शवादी नायक से लेकर ‘धर्म वीर’ और ‘आपकी कसम’ के रोमांटिक हीरो तक—उन्होंने हर शैली को अपना बनाया और हर किरदार को अमर कर दिया।

उनके जाने के साथ भारतीय सिनेमा का वह दौर भी समाप्त हो गया जो बड़े पर्दे पर सितारों की चमक, उनकी आवाज़, उनकी अदाकारी और उनके करिश्मे के कारण पहचाना जाता था। आज देश में हर उम्र का दर्शक एक ऐसी हस्ती को याद कर रहा है जिसने न सिर्फ फिल्में दीं बल्कि भावनाएँ दीं, मुस्कान दी और जीवन भर के लिए यादें छोड़ दीं।

धर्मेंद्र भले ही इस दुनिया से विदा हो गए हों, लेकिन उनकी फिल्में, संवाद, मुस्कान और वह अनोखी सरलता हमेशा भारतीय सिनेमा के आसमान में चमकते रहेंगे। आज पूरा देश उन्हें श्रद्धांजलि देते हुए यही कह रहा है—

“धर्मेंद्र, आपने सिर्फ फिल्में नहीं कीं आपने हमारी जिंदगी को खूबसूरत बनाया।”

देश को मिला नया मुख्य न्यायाधीश: न्यायपालिका में पारदर्शिता और सुधारों की नई उम्मीदें

सूर्यकांत ने राष्ट्रपति भवन में ली शपथ, प्रधानमंत्री सहित अनेक गणमान्य हस्तियां रहीं उपस्थित

(जीएनएस)। नई दिल्ली। भारतीय न्यायपालिका के इतिहास में सोमवार का दिन एक महत्वपूर्ण अध्याय जोड़ गया, जब न्यायमूर्ति सूर्यकांत ने देश के 53वें मुख्य न्यायाधीश (CJI) के रूप में शपथ लेकर सर्वोच्च न्यायिक संस्थान की कमान संभाल ली। राष्ट्रपति भवन के भव्य गणतंत्र मंडप में आयोजित गरिमामयी समारोह में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने उन्हें पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई। समारोह में राष्ट्र की तीनों शक्तियों का अद्भुत संगम दिखाई दिया—राजनीति, न्यायपालिका और प्रशासन के शीर्ष प्रतिनिधि उपस्थित रहे। भीड़ में सादगी के बावजूद गंभीरता और संवैधानिक महत्व का अनूठा मेल स्पष्ट झलक रहा था। जैसे ही राष्ट्रपति मुर्मु ने शपथ दिलाई, सभागार तालियों से गूंज उठा और न्यायमूर्ति सूर्यकांत आधिकारिक रूप से देश के सर्वोच्च न्यायाधीश बन गए।

गवई का कार्यकाल पूरा, सूर्यकांत पर नई ज़िम्मेदारियां

न्यायमूर्ति सूर्यकांत ने न्यायमूर्ति बी.आर. गवई का स्थान लिया, जिनका कार्यकाल 23 नवंबर को पूरा हुआ। नए CJI अब आगामी 14 महीनों से अधिक—9 फरवरी 2027 तक—भारत की सर्वोच्च न्यायिक व्यवस्था का नेतृत्व करेंगे। इस अवधि को कई विशेषज्ञ महत्वपूर्ण मान रहे हैं, क्योंकि सुप्रीम कोर्ट में लंबित मामलों की संख्या, डिजिटल न्याय प्रणाली के विस्तार, तथा न्यायिक प्रक्रियाओं में तेजी और पारदर्शिता जैसी चुनौतियां उनकी राह में होंगी।

विभिन्न क्षेत्रों के दिग्गजों की मौजूदगी

शपथ ग्रहण के इस ऐतिहासिक अवसर पर उपराष्ट्रपति सी.पी. राधाकृष्णन, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, केंद्रीय कानून मंत्री अर्जुन राम मेघवाल, सुप्रीम कोर्ट के अनेक न्यायाधीश, विभिन्न राज्यों के न्यायाधीश, कैबिनेट मंत्री, वरिष्ठ अधिवक्ता और गणमान्य हस्तियां मौजूद थीं।

समारोह में उपस्थित लोगों के चेहरे पर नए CJI से जुड़ी उम्मीदें साफ झलक रही थीं।

प्रधानमंत्री मोदी ने दी शुभकामनाएं

शपथ के तुरंत बाद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक्स (पूर्व ट्विटर) पर लिखा—

“न्यायमूर्ति सूर्यकांत के मुख्य न्यायाधीश पद की शपथ में शामिल हुआ। उनके सफल और प्रभावी कार्यकाल के लिए शुभकामनाएं।”

प्रधानमंत्री की यह प्रतिक्रिया इस बात का संकेत भी मानी जा रही है कि आने वाले समय में सरकार न्यायपालिका के साथ मिलकर डिजिटल कोर्ट, ई-फाइलिंग और नए न्यायिक ढांचे में कई महत्वपूर्ण कदम उठा सकती है।

सुधारों की उम्मीदें बढ़ीं

न्यायमूर्ति सूर्यकांत अपने सख्त, स्पष्ट और संवेदनशील फैसलों के लिए जाने जाते हैं। उनके नेतृत्व में न्यायिक सुधार, पारदर्शिता, संवैधानिक मूल्यों की रक्षा और आमजन के लिए आसान न्याय व्यवस्था की दिशा में ठोस कदम उठने की उम्मीद जताई जा रही है।

सुप्रीम कोर्ट के भीतर नई तकनीकों को अपनाने, जजों की नियुक्ति व्यवस्था में पारदर्शिता बढ़ाने और केस मैनेजमेंट सिस्टम को मजबूत बनाने का दौर अब और तेज होने की संभावना है।

नई शुरुआत का संकेत

न्यायमूर्ति सूर्यकांत के कार्यभार संभालने के साथ ही भारत की न्यायपालिका एक नए युग की ओर बढ़ती दिखाई दे रही है। संविधान की आत्मा को जीवित रखने और न्याय व्यवस्था को और अधिक जनोन्मुख बनाने के संकल्प के साथ उनका नया सफर शुरू हो चुका है। देश की निगाहें अब सर्वोच्च न्यायालय के इस नए नेतृत्व पर टिकी हैं, जो आने वाले समय में न्याय के भविष्य की दिशा तय करेगा।

शंघाई एयरपोर्ट पर भारतीय महिला का अपमान, अरुणाचल को बहाना बनाकर 18 घंटे रोका चीन का दुर्व्यवहार खुलकर सामने आया

(जीएनएस)। शंघाई/नई दिल्ली। चीन के शंघाई पुडोंग अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर एक भारतीय महिला यात्री के साथ हुआ व्यवहार न सिर्फ चौंकाने वाला है, बल्कि भारत की संप्रभुता और अरुणाचल प्रदेश के सम्मान पर भी सीधा सवाल खड़ा करता है। अरुणाचल प्रदेश में जन्मी भारतीय नागरिक पेमा वांगजॉम थोंगडोक के साथ चीनी आव्रजन अधिकारियों ने जो कुछ किया, उसने अंतरराष्ट्रीय यात्रा सुरक्षा और मानवाधिकारों को लेकर गंभीर चिंता पैदा कर दी है। पेमा लंदन से जापान के लिए यात्रा कर रही थीं। शंघाई में उनका तीन घंटे का ट्रांजिट था, जो देखते-देखते 18 घंटे की भयावह परेशानी में बदल गया। जैसे ही चीनी इमिग्रेशन अधिकारियों ने उनके पासपोर्ट में जन्मस्थान के रूप में Arunachal Pradesh देखा, तुरंत ही पासपोर्ट को “अमान्य” घोषित कर दिया गया। पेमा के अनुसार अधिकारी बार-बार एक ही बात दोहरा रहे थे—“अरुणाचल चीन का हिस्सा है”—और इसी आधार पर उन्हें रोके रखा गया।

पासपोर्ट जब्त, अपमानजनक सवाल और भोजन तक नहीं

पेमा ने बताया कि सुरक्षा जांच पूरी करने के बाद भी उन्हें जबरन वापस बुलाया गया और पासपोर्ट छीन लिया गया। उन्हें न तो भोजन मिला, न पानी, और न ही कोई बुनियादी सुविधा दी गई। इंतजार करते हुए जब उन्होंने एयरलाइंस स्टाफ से मदद मांगी, तो उल्टा उनका मज़ाक उड़ाया गया और तंज कसा गया—“चीनी पासपोर्ट बनवा लो।”

वैध वीज़ा होने के बावजूद फ्लाइट से रोका गया

पेमा के पास जापान का वैध वीज़ा था, फिर भी अधिकारियों ने उन्हें अगली फ्लाइट में बैठने से रोक दिया और ज़बरदस्ती नया टिकट कटवाने का दबाव बनाया। ट्रांजिट ज़ोन में फंसे होने के कारण वह खाना भी नहीं खरीद सकीं और न ही किसी अन्य टर्मिनल पर जा सकीं। उनकी स्थिति लगातार खराब होती जा रही थी।

भारतीय दूतावास ने बचाई इज़्ज़त

आखिरकार ब्रिटेन में एक मित्र की मदद से मामला भारतीय दूतावास तक पहुंचा। भारतीय अधिकारियों के हस्तक्षेप के बाद देर रात पेमा को चीन से रवाना किया गया। उन्होंने चीन में मिले इस अपमानजनक व्यवहार को “भारत की संप्रभुता और अरुणाचल के नागरिकों के सम्मान पर सीधा हमला” बताया है।

प्रधानमंत्री को लिखी चिट्ठी, कार्रवाई और मुआवजे की मांग

पेमा ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, विदेश मंत्री और संबंधित अधिकारियों को पत्र लिखकर इस घटना की गंभीर शिकायत की है। उन्होंने कहा कि भारत को इस मुद्दे को तत्काल चीन के सामने उठाना चाहिए, दोषी अधिकारियों पर कार्रवाई की मांग करनी चाहिए और ऐसे मामलों को दोबारा होने से रोकने के लिए सख्ती से कदम उठाने चाहिए। उन्होंने यह भी आग्रह किया है कि अरुणाचल प्रदेश के यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए विशेष प्रोटोकॉल तैयार किए जाएं। यह घटना सिर्फ एक महिला यात्री से जुड़े दुर्व्यवहार की कहानी नहीं, बल्कि चीन की पुरानी दादागिरी और अरुणाचल प्रदेश पर उसकी अनाधिकार दावे की एक और झलक है—जिसका जवाब अब वैश्विक स्तर पर मांग किया जा रहा है।

बेरूत में इजराइली एयरस्ट्राइक से हिज्बुल्लाह को बड़ा झटका, शीर्ष कमांडर हेथम तबताबाई ढेर

(जीएनएस)। लेबनान की राजधानी बेरूत एक बार फिर दहशत की रात से गुज़री, जब बुधवार देर रात इजराइली लड़ाकू विमानों ने दक्षिणी बेरूत के हारेट हरेक इलाके में हिज्बुल्लाह के एक रणनीतिक ठिकाने को निशाना बनाते हुए ताबड़तोड़ हवाई हमले किए। इस

हमले ने न केवल पूरे क्षेत्र में तीव्र तनाव पैदा कर दिया, बल्कि हिज्बुल्लाह की सैन्य शाखा को भी ऐसा आघात पहुँचा, जिसकी गूँज आने वाले दिनों तक सुनाई दे सकती है। हमले में संगठन के शीर्ष कमांडरों में शामिल हेथम अली तबताबाई की मौत की आधिकारिक पुष्टि हिज्बुल्लाह की ओर से कर दी गई है। उनके साथ चार अन्य प्रमुख आर्तकियों—इब्राहिम अली हुसैन, रिफ़ात अहमद हुसैन, मुस्तफ़ा असद बरौ और कासिम हुसैन बरजावी—की भी मौत हुई है। तबताबाई को हिज्बुल्लाह की सैन्य संरचना में महासचिव नईम कासिम के बाद सबसे प्रभावशाली व्यक्तियों में गिना जाता था। 1980 के दशक में संगठन से जुड़ने के बाद उसने राडवान फोर्स की कमान संभाली और खासकर सीरिया में कई महत्वपूर्ण अभियानों के संचालन में केंद्रीय भूमिका निभाई। 2024 के आखिर में वरिष्ठ कमांडरों की लगातार मौत के बाद तबताबाई इजराइल-विरोधी योजनाओं और सीमा-पार हमलों की रणनीति तैयार करने में सबसे आगे था। उसे कई पश्चिमी खुफिया एजेंसियाँ लंबे समय से उच्च-जोखिम वाले टारगेट के रूप में चिह्नित किए हुए थीं। इजराइल ने इस हमले को जुलाई 2024 के बाद से बेरूत में की गई पहली बड़ी सैन्य कार्रवाई बताया है। द टाइम्स ऑफ इजराइल की रिपोर्ट में दावा किया गया है कि यह ऑपरेशन लंबे समय से तैयारी में था और तबताबाई की लोकेशन की सटीक जानकारी मिलने के बाद इसे अंजाम दिया गया। इजराइली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने बयान जारी कर तबताबाई को “इजराइलियों और अमेरिकियों के खून से रंगा खतरनाक आतंकी” करार दिया और कहा कि हिज्बुल्लाह को दोबारा ताकतवर होने की अनुमति नहीं दी जाएगी। हमले का समय भी विशेष रूप से महत्वपूर्ण माना जा रहा है। यह कार्रवाई लेबनान और इजराइल के बीच अमेरिका की मध्यस्थता से बने युद्धविराम समझौते की पहली वर्षगांठ के आसपास हुई है। इजराइल का आरोप है कि लेबनान हिज्बुल्लाह को रोक पाने में नाकाम रहा है और संघर्ष विराम की शर्तों का लगातार उल्लंघन हो रहा है। इसके विपरीत, लेबनान के राष्ट्रपति जोसेफ आउन ने अंतरराष्ट्रीय समुदाय से अपील की है कि वह इजराइली हमलों को रोकने के लिए तत्काल हस्तक्षेप करे। उनका कहना है कि अगर ऐसे हमले रोके नहीं गए तो पूरा क्षेत्र फिर बड़े युद्ध की ओर धकेला जा सकता है। लेबनान के स्वास्थ्य मंत्रालय ने बताया है कि एयरस्ट्राइक में कम से कम 28 लोग घायल हुए हैं, जिनमें कई नागरिक भी शामिल हैं। घटनास्थल पर मौजूद लोगों ने बताया कि अचानक तेज धमाकों से कई किलोमीटर तक कंपन महसूस किए गए। हमले के बाद इलाके में इमरजेंसी सेवाओं की दर्जनों गाड़ियाँ पहुँचीं और कई घायलों को रातभर अस्पतालों में भर्ती किया जाता रहा। हेथम अली तबताबाई का जन्म 1968 में बेरूत में हुआ था। उनकी मां लेबनानी और पिता ईरानी मूल के थे। युवा उम्र में ही वह हिज्बुल्लाह की विचारधारा से प्रभावित हो गया और संगठन की सैन्य शाखा से जुड़कर तेज़ी से ऊंचे पदों तक पहुँचा।

संपादकीय

नई श्रम संहिताएं

इसमें दो राय नहीं कि नई श्रम संहिताएं लागू करना देश के श्रम परिदृश्य में एक नये दौर में प्रवेश करने जैसा है। केंद्र सरकार ने चारों श्रम संहिताओं मसलन वेतन,औद्योगिक संबंध, सामाजिक सुरक्षा और व्यावसायिक सुरक्षा एवं कार्य स्थितियों को अधिसूचित किया है। केंद्र सरकार 29 केंद्रीय कानूनों की जगह चार संहिताओं को लाने वाले इस कदम को ऐतिहासिक सुधार के तौर पर पेश कर रही है। दावा किया जा रहा है कि इससे अनुपालन सरल बनेगा, सामाजिक सुरक्षा का विस्तार होगा और ये कदम श्रमिकों की सुरक्षा को मजबूती देगा। इस पहल में कर्मचारियों को समय पर वेतन, औपचारिक नियुक्ति पत्र देने, न्यूनतम वेतन की गारंटी और वार्षिक स्वास्थ्य जांच का वायदा किया गया है। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि श्रम सुधारों के कई प्रावधान, लंबे समय से अपेक्षित प्रगति का संकेत देते हैं। सभी क्षेत्रों में न्यूनतम वेतन का सार्वभौमिक वैधानिक अधिकार, अनिवार्य लिखित नौकरी अनुबंध, निश्चित अवधि के कर्मचारियों के लिये बेहतर ग्रेच्युटी तक पहुंच और स्वास्थ्य व सुरक्षा पर स्पष्ट मानदंड, औपचारिक प्रावधानों और पारदर्शिता की दिशा में बदलाव को रेखांकित करते हैं। निश्चित रूप से सामाजिक-सुरक्षा ढांचे के भीतर गिग और प्लेटफॉर्म श्रमिकों को मान्यता देना शायद सबसे बड़ा संरचनात्मक परिवर्तन माना जा सकता है। सही मायनों में यह बदलाव लंबे से समय से वैधानिक दायरे से बाहर रह रहे एक बड़े वर्ग को मान्यता प्रदान करता है। निश्चय ही, ये देश के लाखों कामगारों को सुरक्षा कवच प्रदान करेगा।

वहीं दूसरी ओर ये संहिताएं महिलाओं के लिये भी रोजगार की समान परिस्थितियां अनिवार्य बनाती हैं। इस प्रयास से महिलाओं की कार्यबल में भागीदारी का दायरा बढ़ेगा। हालांकि, इन प्रयासों से जुड़ी कुछ जरूरी चेतावनियां भी सामने आ रही हैं। उदाहरण के लिये औद्योगिक संबंध संहिता, छंटनी और संस्थान को बंद करने के लिये सरकारी मंजूरी की सीमा को सौ कामगारों से बढ़ाकर तीन सौ कर देती है। इन नई श्रम संहिताओं के लागू होने पर उद्योग जगत जहां इस बदलाव को लचीला बताकर स्वागत कर रहा है, वहीं श्रम संगठनों को चिंता है कि इससे रोजगार की सुरक्षा कम होगी। ऐसी ही कई आशंकाओं को लेकर देश की कई केंद्रीय ट्रेड यूनियनों ने विरोध प्रदर्शन की घोषणा की है। उनका तर्क है कि नई व्यवस्था कामगारों के सामूहिक दबाव से बातचीत की गुंजाइश को कमजोर करती है। साथ ही सत्ता का झुकाव नियोक्ताओं की ओर नजर आता है। वहीं दूसरी ओर नये प्रावधानों का क्रियान्यवन राज्यों पर निर्भर करेगा। जिन्हें इसके बाबत पूरक नियम बनाने होंगे। राज्यों द्वारा असमान रूप से प्रावधान अपनाने से एकीकृत रूप से राष्ट्रीय व्यवस्था के निर्माण में बाधा उत्पन्न होगी। वहीं दूसरी ओर इन संहिताओं की सफलता प्रवर्तन की ईमानदारी पर निर्भर करेगी। यह प्रयास तभी प्रभावी होगा जब कार्य परिस्थितियों का पारदर्शी निरीक्षण, सकारात्मक परिणाम देने वाले शिकायत तंत्र और अनौपचारिक कार्यबल तक सही मायने में पहुंचने वाली सामाजिक सुरक्षा योजनाएं सिरे चढ़ सकेंगी। निस्संदेह, देश ने अपनी श्रम नियमावली को फिर से लिखा है। लेकिन जमीनी स्तर पर ठोस बदलाव आने में अभी कुछ वक्त लगेगा।

प्रतीकों के सियासी टोटके फिर भी नाकाम!

> राजनीति में प्रतीकों के जरिए लोकसंदेश की स्थापित परंपरा है। शिखर नेता और शीर्ष राजनीतिक परिवार लोगों से रस्मी घुलना-मिलना, उनकी सदाशयता और सादगी के प्रतीक के रूप में स्थापित हो गया है। किसी हस्ती का सामान्य दिखना और आम लोगों जैसे काम करना वोटरों के समर्थन की गारंटी माना जाता रहा है।

चुनाव नतीजों के बाद बिहार के सियासी गलियारों में एक लतीफा चल पड़ा है। मुकेश सहनी ने तालाब में कूद कर एक मछली पकड़ी, उसे बड़ी हसरत के साथ राहुल गांधी को थमाया, लेकिन राहुल के हाथ से वह मछली भी फिसल गई। जो सहनी महागठबंधन के उप मुख्यमंत्री उम्मीदवार थे, उसके हाथ सिफर ही लगा है। बिहार में चुनाव प्रचार के दौरान मुकेश के साथ राहुल गांधी और कन्हैया कुमार तालाब में कूद गए थे। 'सन ऑफ मल्लाह' के साथ दोनों का तालाब में कूदना दरअसल लोक से जुड़ने का सियासी टोटका था, लेकिन चुनाव नतीजों से साफ है कि ये सियासी टोटके एक बार फिर नाकाम रहे। राजनीति में प्रतीकों के जरिए लोकसंदेश की स्थापित परंपरा है। शिखर नेता और शीर्ष राजनीतिक परिवार लोगों से रस्मी घुलना-मिलना, उनकी सदाशयता और सादगी के प्रतीक के रूप में स्थापित हो गया है। किसी हस्ती का सामान्य दिखना और आम लोगों जैसे काम करना वोटरों के समर्थन की गारंटी माना जाता रहा है। यही वजह है कि कांग्रेस के प्रथम परिवार के राहुल जब भी ऐसा करते हैं, उनसे उम्मीदें बढ़ जाती हैं। यह बात और है कि राजनीति में कामयाबी पाने का यह टोटका कांग्रेस के लिए मुफीद नहीं रहा है।

बिहार में बीते तीन महीनों में राहुल गांधी ने आम आदमी बनने की दो कोशिशें कीं । 'वोटर अधिकार यात्रा' के दौरान मोजे पहने ही मखाने के पानीभरे खेत में वे उतरे और बाद में चुनाव प्रचार के दौरान मुकेश सहनी के साथ मछली पकड़ने के लिए गंदले तालाब में उतर गए। राहुल जब ऐसा करते हैं, बौद्धिकों का एक तबका इसे अभूतपूर्व कदम साबित करने लगता है। बहुत तो इसमें राहुल के दिल की नरमी भी खोज लाते हैं। सोनीपत में जब राहुल ने धान-रोपाई की और ट्रैक्टर चलाया, तब भी ऐसी ही उम्मीदों के पंख लग गए थे । 'भारत जोड़ो न्याय यात्रा' के दोनों चरणों में भी ऐसे कई सारे

नजारे दिखे। तब एक वर्ग की नजर में राहुल की ऐसी कोशिशों से राजनीति बदलने लगी थी। लेकिन तेलंगाना छोड़, राहुल के ऐसे कदमों का कोई चुनावी फायदा नहीं मिला।

इस प्रसंग में सवाल उठ सकता है कि प्रधानमंत्री भी तो ऐसे काम अक्सर करते हैं। काशी के गंगा घाट और प्रयागराज कुंभ जैसे कई मौकों और जगहों पर मोदी सफाई कर्मचारियों का पैर धो चुके हैं, उनके साथ भोजन कर चुके हैं, अयोध्या में अचानक गरीबों के घर पहुंच नेह जताते रहे, किसी परियोजना के पूरा होने के बाद उसमें श्रमस्वेद बहा चुके मजदूरों संग खाना खाते रहे हैं। तो उन पर ऐसे सवाल क्यों नहीं उठते। ऐसा नहीं कि सवाल नहीं उठते। वैचारिक खांचे में बंटी राजनीति और समाज में महज विरोध के लिए सवाल उठते रहे हैं। जिनका जवाब बीजेपी की बजाय वोटर देते रहे हैं।

सवाल है कि राहुल के लोक लुभावन कदमों के बावजूद लोग कांग्रेस के साथ क्यों नहीं खड़ा हो रहे? कुछ महीने पहले कांग्रेस के अंदरूनी हलके में वरिष्ठ नेताओं से पार्टी को उबारने को लेकर राय मांगी गई थी। तब कुछ नेताओं ने अपने घनिष्ठ प्रबुद्ध लोगों की राय मांगी थी। ये पता नहीं कि नेताओं ने पार्टी को सफलता के गुर सुझाए या नहीं । वैसे कांग्रेस के जैसे अंदरूनी हालात हैं, शायद ही कोई नेता सही और वाजिब राय देने का साहस जुटा पाए। सियासी नाकामी से उबारने का नुस्खा वरिष्ठ कांग्रेसियों के पास भी है। चूंकि यह नुस्खा बेहद कड़वा है। डर ये है कि कड़वी दवा सुझाना कठिन हो सकता है। लिहाजा राय देने से लोग बच रहे हैं।

स्वाधीनता आंदोलन की प्रतिनिधि पार्टी रही कांग्रेस अखिल भारतीय संगठन से लैस है। सत्तावादी राजनीति के दौर में कांग्रेस इस थाती पर गर्व कर सकती है। लेकिन संगठन को गतिशील बनाने वाले सही मुद्दों और लोकमर्म को छूने वाले विचारों से वह सर्वथा दूर है। राहुल उन्हीं मुद्दों को ज्यादा उछालते हैं, जिन्हें उनके वामपंथी सलाहकार सुझाते हैं। बौद्धिक और अकादमिक जगत इससे चाहे जितना भी आकर्षित हो, जमीनी स्तर पर वह अस्वीकार्य हो चुकी है। निजीकरण की कुछ खामियां हैं, लेकिन भूलना नहीं होगा कि निजीकरण ने चमक-दमक भी बढ़ाई है। भले ही एक वर्ग तक निजीकरण की रोशनी नहीं पहुंच सकी है। उस वर्ग का भी सपना चमक को हासिल करना है। वामपंथी वैचारिकी इसे नहीं समझती। वह जाहिर करती रही है कि अतीत की तरह अब भी समूचा देश अंधेरे में डूबा है। वह भूल जाती है कि देश पर सबसे ज्यादा दिनों तक कांग्रेस का ही शासन रहा है।

जातिवाद कड़वी सच्चाई है। हजारों साल की परंपरा का एकदम खत्म होना संभव नहीं। कड़वा सच है कि जातिवाद को दूर करने और उससे दूर रहने का दावा करने वाली राजनीति और बौद्धिक भी इनसे अछूते नहीं। उनके अंदरूनी खांचे में जातिवाद कई रूपों में मौजूद है। वैसे जाति और धर्म के संदर्भ में समूचे देश और समाज को एक फॉर्मूले से समझना संभव नहीं। कांग्रेस यही गलती दोहरा रही है। राहुल के सलाहकारों की टीम उन्हें इसी फॉर्मूले में बार-बार आगे बढ़ने का सुझाव देती है। अब तो योगेंद्र यादव भी राहुल गांधी के बड़े सलाहकार हैं। समाजवादी दिग्गज किशन पटनायक के शिष्य यादव की सोच पर समाजवाद का कम, वामपंथ का असर ज्यादा है। 1999 में एक्जिट पोल को काला जादू न मानने वाले योगेंद्र को अब बीजेपी की हर जीत में शंका ही नजर आती है। कांग्रेस आलाकमान के तमाम सलाहकार कभी शिक्षा के लालगढ़ की राजनीति के प्रतीक रहे। दुर्भाग्यवश उनकी सामाजिक सोच जमीनी हकीकत की बजाय वामपंथी दर्शन से ज्यादा प्रभावित है। इस टीम के अनुसार ऊंच-नीच और जात-पांत का विचार समूचे देश में एक जैसा है। लेकिन यह अधूरा सच है। समूचा देश ना तो एक तरह से सोचता है ना ही उसका एक-सा व्यवहार है। शीर्ष नेतृत्व की सलाहकार मंडली अलग-अलग हिस्सों की माटी के रंग, व्यवहार और विचार से कोसों दूर है।

राहुल को इन दिनों अपनी दादी इंदिरा गांधी की याद खूब आती है। लेकिन वे इंदिरा के कई गुणों को अब तक समझ नहीं पाए हैं..। समाज को लेकर इंदिरा की समझ गहरी थी। यही वजह है कि वक्त और इलाके की परंपरा के मुताबिक, किसी इलाके में ठेठ बहू बन जाती थीं, तो किसी इलाके में आधुनिक महिला। कुछ इलाकों में वे अपने सिर पल्लू रखती थीं तो कुछ इलाकों में नहीं। आज इंदिरा रहतीं और वैसा करतीं तो शायद कांग्रेस के मौजूदा सिपहसालारों की नजर में वे दकियानूस मान ली जातीं।

स्वाधीनता आंदोलन के दौरान कांग्रेस की छतरी तले कई विचारधाराएं काम कर रही थीं। इंदिरा काल के किंचित वामपंथीकरण को छोड़ दें तो पार्टी का नजरिया ज्यादातर मध्यमार्गी और समाजवादी ही रहा। इंदिरा काल में वामपंथी प्रभाव इतना नहीं रहा कि वह अपनी बुनियादी विचारधारा को ही बदल दे। लेकिन आज देश की सबसे पुरानी पार्टी पर वामपंथ का खूब असर है। इसलिए उसके मुद्दे भी इसी से प्रभावित हैं। वाम वैचारिकी हर मुद्दे को नैरेटिव विशेष के लिहाज से उछालती है। सांप्रदायिकता,धर्म और जाति से जुड़े उसके विचार पारंपरिकता से इतर हैं। बीजेपी के खिलाफ हर बार सांप्रदायिकता का वामपंथी एजेंडा और नैरेटिव का उठाना इसी मंडली की कारसाजी होती है। इस नजरिया वाली सांप्रदायिकता का प्रतिकार सूत्र बीजेपी ने खोज लिया है। उसके लिए यह पिच आसान हो गई है। इसीलिए वह ज्यादातर चुनावों में कांग्रेस को मात दे रही है। इसी सोच के चलते कांग्रेस यूपी, बिहार जैसे राज्यों में उन दलों के छोटे भाई की भूमिका तक सीमित हो गई है, जिनका उदय गैरकांग्रेसवाद की बुनियाद पर हुआ है। साक्षर और सूचना से लैस लोग इन प्रतीकों के छुपे संदेशों को समझने-बूझने लगे हैं। लेकिन कांग्रेस इस प्रक्रिया को नहीं समझ पा रही।

बिहार में कांग्रेस का बड़ा दांव नहीं रहा । 243 सीटों वाली विधानसभा में वह महज 61 सीटों पर मैदान में रही। मछली पकड़े और तालाब में छपाक करने का राहुल दांव नाकाम रहा। फिर भी अगर राहुल की वैचारिकी और रणनीति पर कांग्रेस में सवाल नहीं उठ रहा, तो हैरत होना स्वाभाविक है।

प्रेरणा

मौन की छाया में जन्मी बुद्धि की कथा

राजा सोमदत्त के निधन के बाद पूरे राज्य पर जैसे उदासी की धुंध छा गई थी, परंतु इस धुंध का सबसे भारी बोझ किसी और के नहीं, बल्कि युवा राजकुमार तरुण दत्त के कंधों पर आ गिरा था। महल की गलियों में उनके कदमों की आहट भी भारी लगती थी। पिता के जाने के बाद जैसे वे भीतर से खाली हो गए थे—मानो आत्मा ने अपनी चमक खो दी हो। राजकुमार अक्सर महल की ऊँची खिड़कियों से दूर जंगलों की ओर देखा करते, पर उन्हें न कोई राह दिखाई देती, न कोई निर्णय।

एक दिन उन्होंने अपने पिता के पुराने मंत्री, वृद्ध और बुद्धिमान राजगुरु समान व्यक्ति को बुलाया। उनके सफ़ेद दाढ़ी और झुकी आँखों के पीछे वर्षों का अनुभव छिपा था।

राजकुमार ने धीमे स्वर में कहा, "मंत्रीजी, राजकाज अब मुझे संभालना है, पर मैं बहुत अनभिज्ञ हूँ। कृपया मुझे दिशा दें कुछ मार्गदर्शन, कुछ सीखें, कुछ मेरे गुण-दोष बताएं, ताकि मैं अपने पिता की तरह न्यायप्रिय राजा बन सकूँ।"

मंत्री ने उन्हें एक लंबी, स्थिर दृष्टि से देखा।

"महाराज, गुण-दोष का समय बाद में आएगा। शासन की जड़ वाणी में होती है—जैसे राज्य की तलवार उसकी सेना होती है। जो बोलें, सोचकर बोलें। और जहाँ मौन उचित हो—वहाँ शब्दों को बाहर न निकलने दें। वाचाल मनुष्य अपना संकट स्वयं खींचता है।"

राजकुमार ने यह बात सुनी तो अवश्य, पर जैसे कोई पुस्तक का पहला पृष्ठ पढ़े—अर्थ गहरा मन में नहीं उतरा।

कुछ ही दिनों बाद मंत्री ने स्वयं अवसर देने का निश्चय किया और शिकार पर चलने का आग्रह किया। राजकुमार को भी मन बहलाने की आवश्यकता थी, इसलिए वे दोनों घोड़े लेकर वन की ओर निकल पड़े।

वन अपनी पूरी भव्यता में स्वागत कर रहा था—

ऊँचे साल, घने सागौन, दूर पहाड़ियों से आती हवा की बांसुरी-सी धुन,

पत्तों पर दौड़ती धूप, वृक्षों की छाया

राजकुमार कई दिनों बाद थोड़ा हल्का महसूस कर रहे थे।

सारा दिन बीता, पर शिकार हाथ न लगा। सूरज अब ढलने लगा था। हवा में ठंडक भरने लगी थी। वे दोनों वापस लौटने ही वाले थे कि अचानक एक झाड़ी से खड़खड़ाहट और फिर तेज़, हड़बड़ाहट भरी तीतर की पुकार सुनाई दी।

राजकुमार ने तत्परता से लगाम खींची और आवाज़ की दिशा में देखने लगे। उनके भीतर शिकारी भाव जाग उठा। तीतर शायद किसी दूसरी आवाज़ पर घबरा गया था, पर उसने मौन नहीं धारण किया—बल्कि लगातार और ज़ोर से चिल्लाता रहा।

राजकुमार ने धनुष उठाया, तीर चढ़ाया, और आवाज़ की दिशा में छोड़ दिया। तीर सीधा गया और तीतर को जा लगा। वह वहीं गिर पड़ा—अब हमेशा के लिए मौन।

मंत्री कुछ क्षण तक स्थिर रहे, फिर झाड़ी के पास जाकर धीरे से बोले,

"नादान प्राणी यदि तुम चुप रहते, तो आज भी जीवित होते।"

राजकुमार को यह वाक्य साधारण नहीं लगा। उनके भीतर कोई हलचल उठी—जैसे कोई बंद द्वार खुलने की कोशिश कर रहा हो।

उन्होंने धीरे से पूछा, "मंत्रीजी, आपने ऐसा क्यों कहा? तीतर तो बस बोल रहा था।"

मंत्री मुस्कराए, पर उनकी आँखें गंभीर थीं।

"महाराज, जीवन में सबसे बड़ा संकट एक ही वस्तु खींचती है—असंयमित वाणी। तीतर को न तो शिकार का पता था, न कोई खतरा दिखा, पर उसने अपनी आवाज़ से स्वयं को प्रकट कर दिया। यही भूल मनुष्य भी करता है।"

फिर वे आगे बोले—

"राजकुमार, शासन में रहस्य, विचार, निर्णय इन सबका अपना समय होता है। जो हर बात तुरंत कह देता है, वह अपने ही शब्दों से घिर जाता है। जो अधिक बोलता है, वह अपने शत्रु को शक्ति देता है। मौन में शक्ति होती है, और संयमित वाणी में साम्राज्य।"

राजकुमार उस शाम शिकार पर नहीं गए थे—वे अपने भीतर की आवाज़ सुनने गए थे,

और लौटकर वे पहले से अलग व्यक्ति बन गए।

रात को उन्होंने तीतर के बारे में नहीं सोचा—उन्होंने अपने अंदर छिपे उस "तीतर" के बारे में सोचा

जो आवेग में, असुरक्षा में, अधीरता में,

बिना सोचे शब्दों के तीर छोड़ देता है।

और उस दिन से, उनका प्रशिक्षण वास्तव में शुरू हुआ—

तलवार, मंत्र, युद्धकला का नहीं,

बल्कि मौन, संयम, विचार और शब्दों के विज्ञान का।

यही मौन-विज्ञान उन्हें आगे चलकर उस राजा में बदलने वाला था

जो केवल शासन नहीं करता था,

बल्कि अपने मन और वाणी पर भी शासन कर सकता था।

इस प्रकार तीतर की छोटी-सी घटना

राज्य की सबसे बड़ी शिक्षा बन गई—

कि शब्द या तो रक्षक होते हैं

या फिर वही शत्रु बन जाते हैं,

और जो अपने शब्दों को नियंत्रित कर लेता है,

वह जीवन के हर युद्ध को जीत लेता है।

दुबई एयरशो में तेजस हादसा और मेक-इन-इंडिया की साख : क्रैश के बाद भी चमकेगा भारत का स्वदेशी सितारा?

21 नवंबर को दुबई वर्ल्ड सेंट्रल (अल-मक्तूम) एयरपोर्ट पर आयोजित एयर शो के दौरान भारतीय वायुसेना का स्वदेशी लाइट कॉम्बैट एयरक्राफ्ट (एलसीए) 'तेजस एमके-1ए' अचानक नियंत्रण खोकर नीचे गिर गया और आग के गोले में बदल गया। भारतीय वायुसेना ने हादसे की पुष्टि करते हुए कहा कि इस दुर्घटना में पायलट की शहादत हुई है और घटना की खोज के लिए कोर्ट-ऑफ-इंक्वायरी गठित की गई है। दुबई एयरशो के दौरान हजारों लोग अपनी आंखें ऊपर टिकाए उस गर्वित क्षण को देख रहे थे, जब भारत का तेजस एमके-1ए देश की आकाश में अपने कौशल की झलक दिखा रहा था परंतु कुछ ही पलों में यह दृश्य एक भयावह त्रासदी में बदल गया। विमान ने अचानक अपनी स्थिरता खो दी, जैसे किसी ने उसकी धड़कन रोक दी हो और देखते-ही-देखते वह सीधे नीचे गिरता हुआ आग के विशाल गोले में परिवर्तित हो गया। धुएं का काला गुबार ऊपर उठा और पूरा एयरशो मानो स्तब्ध होकर ठहर गया।स्वदेशी इंजीनियरिंग का सबसे चमकदार प्रतीक यह वही तेजस है, जिसने पहली बार 2001 में उड़ान भरी थी और 23 वर्षों तक किसी भी दुर्घटना का शिकार नहीं हुआ। दुनिया के कई हल्के लड़ाकू विमानों में तेजस को सबसे सुरक्षित माना जाता था और आज भी उसकी श्रेणी में यह एक अत्यंत विश्वसनीय प्लेटफॉर्म है। तेजस क्रैश का यह दूसरा मामला है। पहला मार्च 2024 में राजस्थान के जैसलमेर के पास हुआ था, जिसमें पायलट सुरक्षित इजेक्ट हो गए थे। बाद की जांच में पाया गया था कि उस दुर्घटना का कारण इंजन का अचानक सीज होना था। इसके पीछे ऑयल पंप में खराबी की संभावना बताई गई थी। उस घटना के बाद पूरे एलसीए एमके-1 बेड़े की विस्तृत सुरक्षा जांच की गई और पाया गया कि विमान में कोई प्रणालीगत सुरक्षा खामी नहीं है। ऐसी स्थिति में दुबई हादसा एक बार फिर प्रश्न उठाता है कि आखिर इस विश्वसनीय प्लेटफॉर्म ने प्रदर्शन के दौरान अचानक ऐसा व्यवहार क्यों किया, जिसने पायलट को प्रतिक्रिया का भी अवसर नहीं दिया?

दुबई एयरशो में विमान द्वारा किए जा रहे मैन्यूवर्स के दौरान जो दृश्य सामने आए, उन्होंने विशेषज्ञों के बीच कई सवाल पैदा किए हैं। विमान तेज गति से एक मोड़ ले रहा था और सामान्यतः ऐसी परिस्थितियों में तेजस जैसे आधुनिक चौथी पीढ़ी के विमान स्थिर रहते हैं परंतु पलभर में ही उसका नियंत्रित ग्लाइड अचानक एक फ्री-फॉल में तब्दील हो गया। विमान के नीचे आते ही कुछ ही सैकेंड में वह पूरी तरह आग में घिर गया। ऐसे में सवाल यही है कि क्या तेजस में कोई ऐसी खामी थी, जो वह दुर्घटनाग्रस्त हुआ। क्या उसकी उड़ान से पहले फिट होने की सही तरह से जांच नहीं की गई थी? न केवल देश बल्कि दुनिया के सामने यह सामने आना जरूरी है कि आखिर तेजस एकाएक हवा से सीधा जमीन पर क्यों आ गिरा क्योंकि इसे पूरी तरह सुरक्षित माना जाता है। विशेषज्ञों के मुताबिक, या तो विमान को अचानक पावर लॉस हुआ या किसी महत्वपूर्ण नियंत्रण प्रणाली ने काम करना बंद कर दिया। यह भी संभव है कि अत्यधिक तेज कोण (एंगल ऑफ अटैक) में मोड़ लेते हुए विमान एरोडायनामिक स्टॉल का शिकार हो गया हो परंतु अनुभवी टेस्ट पायलट ऐसे मैन्यूवर के दौरान सामान्यतः नियंत्रण नहीं खोते। इसलिए जांच की दिशा स्वाभाविक रूप से किसी तकनीकी विफलता, इंजन व्यवहार, नियंत्रण प्रणाली या अचानक हुई किसी यांत्रिक टूट-फूट की तरफ जाएंगी।

तेजस एमके-1ए को भारत का सबसे आधुनिक, हल्का और अत्याधुनिक तकनीक वाला लड़ाकू विमान माना जाता है। यह सुपरसोनिक गति से उड़ान भर सकता है, बियॉन्ड विजुअल रेंज मिसाइलें दाग सकता है और एक साथ कई लक्ष्यों को भेद सकता है। इसका ढांचा टाइटेनियम, एल्युमिनियम-लिथियम मिश्रधातुओं और कार्बन फाइबर कंपोजिट से बना है, जिससे यह बेहद हल्का और मजबूत बनता है। यह हल्का वजन ही इसे असाधारण फुर्ती प्रदान करता है। तेजस की रेंज, पेलोड और युद्धक क्षमता इसे एशिया और अफ्रीका के कई देशों में आकर्षण का केंद्र बनाती हैं। मलेशिया, तुर्कमेनिस्तान, इजिप्ट, यूएई, श्रीलंका और सिंगापुर जैसे देश इसमें रुचि दिखा रहे हैं। इसीलिए दुबई एयरशो में तेजस की उपस्थिति भारत के लिए केवल तकनीक का प्रदर्शन नहीं थी बल्कि यह एक अंतर्राष्ट्रीय मंच था, जहां भारत अपनी रक्षा विनिर्माण क्षमता का भरोसेमंद चेहरा पेश कर रहा था। ऐसे में तेजस का प्रदर्शनी के दौरान दुर्घटनाग्रस्त होना स्वाभाविक रूप से भारत की निर्यात संभावनाओं के लिए चिंता का विषय है। हालांकि रक्षा विशेषज्ञ इस बात पर सहमत हैं कि एक अकेली दुर्घटना किसी विमान की छवि को स्थायी रूप से धूमिल नहीं करती, बशर्ते जांच पारदर्शी, तेज और गहन हो। एफ-16, मिग-29, राफेल, ग्रिपेन इत्यादि दुनिया के लगभग सभी प्रसिद्ध युद्धक विमानों की शुरुआती वर्षों में दुर्घटनाएं हुई थी लेकिन समय के साथ वे दुनिया के सबसे विश्वसनीय प्लेटफॉर्म बने। अतः तेजस के लिए भी यह निर्णायक परीक्षा का समय है।

तेजस भारत का पहला पूर्णतः स्वदेशी लड़ाकू विमान है, हालांकि इसका इंजन अमेरिकी कंपनी जीई से आता है। भारत और जीई के बीच 2021 और 2023 में हुए समझौतों के तहत एमके-1ए और एमके-2 कार्यक्रम के लिए इंजन की आपूर्ति सुनिश्चित की गई है। इंजनों पर आंशिक निर्भरता के बावजूद तेजस की बाकी प्रणाली(डिजाइन, ढांचा, एवीओनिक्स, राडार) भारत द्वारा विकसित की गई हैं। तेजस को भारतीय वायुसेना में 2016 में शामिल किया गया था और तब से इसकी दो स्क्वाड्रन सेवा में हैं। एमके-1ए संस्करण, जो कि दुर्घटनाग्रस्त विमान का मॉडल था, तेजस परिवार का सबसे उन्नत संस्करण माना जाता है। इसके लिए 2021 में भारत सरकार ने एचएएल को 48,000 करोड़ रुपये का बड़ा अनुबंध दिया था और हाल ही में इसकी 97 और इकाईयों के लिए लगभग 62,000 करोड़ रुपये का नया समझौता हुआ था। इसका मतलब है कि भारत आगामी वर्षों में तेजस को अपनी वायुसेना का मुख्य लाइट-फाइटर प्लेटफॉर्म बनाने की दिशा में बढ़ चुका है।

अभियान

मौन की वह सीख जिसने एक राज्य को बचाया

राजा सोमदत्त के निधन ने पूरे राज्य को शोक में डुबो दिया था। महल के गलियारों में सन्नाटा था, और उस सन्नाटे के बीच सबसे अधिक अकेला था राजकुमार तरुण दत्त—जो अब अनायास सिंहासन का उत्तराधिकारी बन गया था। मात्र बीस वर्ष की आयु में पिता का साया सिर से उठ जाना उसके लिए जीवन का प्रथम और सबसे कठोर आघात था। वह घण्टों अकेले बैठा रहता, अपने पिता की बातें याद करता, और नीरवता में डूबे इस विशाल महल में उसे हर दीवार उदासी का एक नया स्वर सुना देती।

एक सुबह, जब सूरज की किरणें महल की रंगीन कांच वाली खिड़कियों से छनकर भीतर आईं, तरुण दत्त ने निर्णय लिया कि अब समय भागने का नहीं, सामना करने का है। उसने मंत्री को बुलवाया—वही मंत्री, जो उसके पिता के समय से राजनीति, कूटनीति और युद्धनीति का अनुभवी मार्गदर्शक था।

जब मंत्री महल के शांत कक्ष में पहुँचे, राजकुमार ने भारी स्वर में कहा, "मंत्रीजी, अब राज्य का भार मेरे कंधों पर है। मैं अनुभवहीन हूँ, पर सीखने को तैयार हूँ। मुझे बताइए कि शासन करते समय मुझे

किन बातों का ध्यान रखना चाहिए। मेरे गुण-दोष भी बताइए, ताकि मैं अपने आपको सही रूप में ढाल सकूँ।"

मंत्री ने राजकुमार को देखा—एक युवा, संवेदनशील, लेकिन दृढ़ बनने की चाह रखने वाला उत्तराधिकारी। कुछ क्षणों तक सोचकर उन्होंने कहा, "महाराज, शासन केवल तलवार या सिंहासन की ताकत से नहीं चलता—यह चलती है सही समय पर सही शब्द कहने की कला से। कई बार मौन राज्य को बचा लेता है और वाचालता संकट बुला लाती है। आज मैं आपको केवल एक बात बताऊँगा—जब बोलें तो सोचकर बोलें, अन्यथा मौन ही श्रेष्ठ है।"

राजकुमार ने यह शिक्षा गांभीर्य से सुनी, लेकिन उसका मन अभी भी स्पष्ट नहीं था। उसे लगा जैसे कुछ और सीखने की आवश्यकता है, कुछ गहरे अनुभव की। मंत्री ने यह भावना पढ़ ली, पर उन्होंने मन ही मन कहा—"अनुभव की शिक्षा शब्दों से नहीं, घटनाओं से पूरी होती है।"

कुछ दिन बाद मंत्री ने राजकुमार से कहा, "महाराज, चलिए आज शिकार पर चलते हैं। मन भी बदलेगा और कुछ समझ भी बढ़ेगी।" राजकुमार तैयार हो गया। दोनों घोड़े पर सवार होकर विशाल वन के भीतर गए—वह वन जहाँ ऊँचे वृक्षों के बीच हवा सरसराती रहती थी और पक्षियों की आवाजें प्रकृति को जीवंत कर देती थीं।

दिनभर वे घूमते रहे, पर कोई शिकार हाथ न लगा। सूर्य धीरे-धीरे पश्चिम में ढलने लगा था, आकाश में सुनहेरी आभा फैलने लगी थी, और वन का शांत वातावरण अब शाम की धुंध में डूबने लगा था। निराश होकर दोनों ने वापस लौटने का निर्णय किया। घोड़े कदम बढ़ा रहे थे और वन का रास्ता शांति में घुल रहा था।

इसी बीच एक घनी झाड़ी के भीतर हल्की-सी सरसराहट हुई। कुछ ही पल बाद तीतर ने अपनी चिर-परिचित तेज़ आवाज में कई बार 'की-की' की ध्वनि निकाली। तीतर को शायद लगा होगा कि कोई जंगली जानवर वहाँ से गुजरा है या वह स्वयं भयभीत था। लेकिन वह नहीं जानता था कि उसकी वही आवाज़ उसकी नियति बनकर खड़ी है।

राजकुमार ने आवाज़ सुनी, झाड़ी की ओर ध्यान गया, और बिना विलंब किए तीर छोड़ दिया। तीर सटीक जाकर लगा और वहीँ तीतर गिरकर तड़प गया।

मंत्री ने दुख भरी नज़र से तीतर को देखा और फिर राजकुमार से कहा, "महाराज, क्या देखा आपने? यह प्राणी जी सकता था, यदि चुप रहता। उसकी ही आवाज़ ने उसे मरवा दिया।"

राजकुमार कुछ क्षणों तक तीतर को देखकर मौन खड़ा रहा, जैसे वह अंदर ही अंदर कोई गहरी समझ प्राप्त कर रहा हो। उसके भीतर मंत्री के सुबह कहे वचन गहराई से उतरने लगे—बिना सोचे बोले गए शब्द, अपने ही लिए संकट बन जाते हैं।

लेकिन मंत्री की शिक्षा यहीं समाप्त नहीं होती। शिकार लौटने के बाद राज्यसभा में कुछ ही दिनों में एक विवाद उठ खड़ा हुआ—दो पड़ोसी राज्यों के दूत आपस में बहस कर रहे थे और परिस्थितियाँ तनावपूर्ण थीं। राजकुमार को पहली बार परिषद में बोलना था। सभी की नज़रें उसकी ओर थीं—क्या कहेगा नया राजा? क्या अनुभवहीनता में कोई भूल करेगा? क्या वाचालता से संकट बढ़ेगा?

पर उस दिन तरुण दत्त ने वही किया, जो उसने उस तीतर की मृत्यु से सीखा था। उसने बहुत कम बोला—जो बोला, सोचकर, संतुलित, संयमित और स्पष्ट बोला। उसके शांत और मापा हुआ उत्तर ने सभा में तनाव समाप्त कर दिया। मंत्री ने गर्व से मुस्कुराकर उसकी ओर देखा—राजकुमार अब राजकाज की पहली सीढ़ी पर चढ़ चुका था।

धीरे-धीरे, उसी एक शिक्षा के आधार पर तरुण दत्त ने अपना शासन स्थापित किया। वह जानता था कि कई युद्ध तलवार से नहीं, शब्दों से लड़े जाते हैं। कई संकट शोर से नहीं, मौन से नष्ट होते हैं। कई बार शांत रहना ही सबसे अधिक शक्तिशाली प्रतिक्रिया होती है।

और इस तरह, एक तीतर की आवाज़ ने एक पूरे राज्य को मौन की महिमा सिखा दी—मौन जो न केवल सुरक्षा है, बल्कि दूरदृष्टि भी है; मौन जो बुद्धि का आभूषण है; और मौन जो शासन का आधार बन जाता है।

राज्य के इतिहास में यह कथा सदियों तक सुनाई जाती रही—

कि कैसे एक युवा राजा ने एक छोटे-से प्राणी की भूल से वह सीख प्राप्त की, जिसने न केवल उसे महान बनाया, बल्कि उसके राज्य को स्थिरता और शांति प्रदान की।

RNI No. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH

जामनगर को मिला सौराष्ट्र का सबसे लंबा फ्लाईओवर ब्रिज

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने जामनगर में 226 करोड़ रुपए से अधिक की लागत से निर्मित सौराष्ट्र के सबसे लंबे फ्लाईओवर ब्रिज का लोकार्पण किया

- सुभाष ब्रिज से सात रास्ता सर्किल तक का नया रूट मिलने से नागनाथ जंक्शन, ग्रेन मार्केट, बेडी गेट जैसे क्षेत्रों में यातायात समस्या का निवारण होगा
- 3750 मीटर लंबे इस ब्रिज के अंडरस्पेस में 1200 से अधिक वाहनों के लिए पार्किंग, स्पोर्ट्स एक्टिविटी तथा फूड जोन जैसी सुविधाओं का समावेश

(जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने सोमवार को जामनगर में 226.99 करोड़ रुपए की लागत से निर्मित सौराष्ट्र के सबसे लंबे फ्लाईओवर ब्रिज का लोकार्पण किया। सात रास्ता सर्किल से सुभाषचंद्र बोस की प्रतिमा तक के इस फोर लेन एलिवेटेड फ्लाईओवर ब्रिज की लंबाई 4 एप्रोच सहित 3750 मीटर है। मुख्य ब्रिज फोर लेन 16.50 मीटर का है, जबकि इंदिरा मार्ग तथा द्वारका रोड एप्रोच टु लेन 8.40 मीटर के हैं। इस फ्लाईओवर ब्रिज के कारण जामनगर के नागरिकों को द्वारका, रिलायंस, नायरा, जीएसएफसी की ओर तथा राजकोट रोड की ओर आसान परिवहन सुविधा मिलेगी। इससे ब्रिज के नीचे स्थित मुख्य चार जंक्शनों सात रस्ता सर्किल, गुरुद्वारा जंक्शन, नर्मदा सर्किल तथा नागनाथ जंक्शन पर होने वाले यातायात जाम एवं दुर्घटना जैसी समस्याओं से बड़ी राहत मिलेगी, परिणामस्वरूप ईंधन व समय की बचत होगी। इतना ही नहीं; सुभाष ब्रिज से सात रास्ता सर्किल होकर लाल बंगला सर्किल तक का नया रूट मिलने से नागनाथ जंक्शन, तीन दरवाजा (ग्रेन मार्केट), बेडी गेट जैसे क्षेत्रों में यातायात समस्या का निवारण होगा। इस विकास कार्य के साथ ही ब्रिज के नीचे स्थित अंडरस्पेस को भी नागरिक सुविधा के लिए विकसित किया गया है; जिसमें कुल 61 स्पेस में 1200 से अधिक वाहनों की पार्किंग व्यवस्था (850 टू-व्हीलर्स, 250 फोर-व्हीलर्स, 100 रिक्शा, 100 अन्य तथा 26 बस पार्किंग) शामिल है। इसके अलावा; कुल 4 स्पेस में पे एण्ड यूज टॉयलेट, 1 लोकेशन पर श्रमिक सुविधा केन्द्र (लेबर चौक), 10 स्पेस में स्पोर्ट्स एक्टिविटी, 4 लोकेशन पर वेटिंग/सिटिंग की व्यवस्था और 4 लोकेशन पर फूड जोन की सुविधाएँ भी उपलब्ध कराई गई हैं। मुख्यमंत्री द्वारा लोकार्पित हुआ यह फ्लाईओवर ब्रिज जामनगर के नागरिकों के जीवन में सरलता व सुगमता लाकर शहर के विकास में एक नया अध्याय जोड़ेगा।

इस अवसर पर जिला प्रभारी मंत्री श्री अर्जुनभाई मोढवाडिया, शिक्षा राज्य मंत्री श्री रीवाबा जाडेजा, सांसद श्री पूनमबेन माडम, महापौर श्री विनोदभाई खीमसूर्या, जिला पंचायत अध्यक्ष श्री मयबेन गरसर, महानगर पालिका की प्रभारी मंत्री श्री पल्लवीबेन ठक्कर, विधायक सर्वश्री मेघजीभाई चावडा, दिव्येशभाई अकबरी, उप महापौर श्री कृष्णाबेन सोढा, स्थायी समिति के अध्यक्ष श्री नीलेशभाई कगथरा, जिला कलेक्टर श्री केतन ठक्कर, महानगर पालिका आयुक्त श्री डी. एन. मोदी, जिला विकास अधिकारी श्री अंकित पन्नू, जिला पुलिस अधीक्षक डॉ. रवि मोहन सैनी, मनपा में शासक पक्ष के नेता श्री आशिष जोशी, सचेतक श्री केतनभाई नाखवा, अग्रणी सर्वश्री बीनाबेन कोठारी, प्रकाशभाई बांभणिया, मेरामण भाटू, विजयसिंह जेठवा आदि उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल मंगलवार को नवसारी में राज्य के 13वें अत्याधुनिक बस पोर्ट का लोकार्पण करेंगे

- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का आम लोगों को एयरपोर्ट जैसी सुविधाओं से युक्त बस पोर्ट देने का अभिनव विचार मुख्यमंत्री के मार्गदर्शन में साकार हुआ
- 82 करोड़ रुपए के खर्च से 5025 वर्ग मीटर क्षेत्र में निर्मित अत्याधुनिक बस पोर्ट के लोकार्पण समारोह में केंद्रीय जल शक्ति मंत्री श्री सी.आर. पाटिल और राज्य मंत्रिमंडल के सदस्य रहेंगे मौजूद

(जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल मंगलवार, 25 नवंबर को नवसारी में 82 करोड़ रुपए के खर्च से 5025 वर्ग मीटर क्षेत्र में नवनिर्मित अत्याधुनिक सुविधाओं वाले बस पोर्ट का लोकार्पण करेंगे।

उल्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने राज्य के बस अड्डों का अत्याधुनिक सुविधाओं के साथ कायाकल्प करने का विजन दिया है, ताकि आम नागरिकों को भी एयरपोर्ट जैसी सुविधाओं से युक्त बस पोर्ट उपलब्ध हो सकें।

गुजरात राज्य सड़क परिवहन निगम (जीएसआरटीसी) ने राज्य में बनने वाले बस अड्डों को प्रधानमंत्री के विजन के अनुरूप आधुनिक सुविधाओं से युक्त बस पोर्ट के रूप में विकसित करने का दृष्टिकोण अपनाया है। सार्वजनिक-निजी भागीदारी (पीपीपी) के आधार पर बनने वाले ऐसे बस पोर्ट में यात्रियों की सुविधा के लिए डीलक्स वेटिंग रूम, आर.ओ. पानी की व्यवस्था, डिपार्टमेंटल स्टोर्स, रिफ्रेशमेंट के लिए कैंटीन, दिव्यांगजनों के लिए व्हील चेयर की सुविधा और सीसीटीवी कैमरे लगाए गए हैं। अब तक राज्य में ऐसे 12 बस पोर्ट बनाए गए हैं।

इतना ही नहीं, बड़े शहरों के बस पोर्ट में मूवी थियेटर, बैंक्वेट हॉल और शॉपिंग मॉल की सुविधा भी उपलब्ध कराई जा रही है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल राज्य के 13वें बस पोर्ट का मंगलवार, 25 नवंबर की शाम पांच बजे नवसारी में लोकार्पण करेंगे। इस अवसर

पर केंद्रीय जल शक्ति मंत्री श्री सी.आर. पाटिल, राज्य के वित्त एवं शहरी विकास मंत्री तथा नवसारी जिला के प्रभारी मंत्री श्री कनुभाई देसाई, आदिजाति विकास मंत्री श्री नरेशभाई पटेल और परिवहन राज्य मंत्री श्री प्रवीणभाई माली सहित कई विधायक और सांसद उपस्थित रहेंगे।

मुख्यमंत्री के मार्गदर्शन में सुविधा युक्त बस पोर्ट के निर्माण के चलते राज्य में पर्यटकों के लिए आरामदायक यात्रा अनुभव, व्यापारियों के लिए नए अवसर और युवाओं एवं महिलाओं को रोजगार एवं करियर के लिए तथा छात्रों को पढ़ाई के लिए आवागमन की प्रभावी सार्वजनिक परिवहन सुविधा मुहैया कराने के साथ ही गुजरात एक महत्वपूर्ण ट्रैवल हब बन गया है।

27 और 28 नवंबर को तलोद-प्रांतिज स्टेशनों के बीच स्थित रेलवे फाटक नं. 53A (टावर रोड फाटक) बंद रहेगा

(जीएनएस)। अहमदाबाद मंडल के असारवा-हिम्मतनगर सेक्शन के तलोद-प्रांतिज स्टेशनों के बीच स्थित रेलवे फाटक नं. 53A किमी 356/1-3 (टावर रोड फाटक) मरम्मत एवं रखरखाव कार्य हेतु 27 नवंबर 2025 को प्रातः 09.00 बजे से 28 नवंबर 2025 को सायः 18.00 बजे तक आवागमन हेतु बंद रहेगा। सड़क उपयोगकर्ता इस अवधि के दौरान रेलवे फाटक नं. 51 B (महियोल फाटक) से आवागमन कर सकते है।

सौराष्ट्र की नींद हिली, तड़के धरती कांपी—हल्के भूकंप ने जगाई दहशत, सौभाग्य से नहीं हुआ नुकसान

(जीएनएस)। गांधीनगर। गुजरात के सौराष्ट्र इलाके में सोमवार तड़के अचानक धरती हिलने से लोगों की नींद टूट गई और कई गांवों में अफरा-तफरी जैसा माहौल बन गया। आधी रात के सन्नाटे में महसूस हुए इस भूकंप की तीव्रता भले ही कम थी, लेकिन झटकों की अनपेक्षित आवाज़ और कंपन ने लोगों को घरों से बाहर निकलने पर मजबूर कर दिया। 24 नवंबर की सुबह ठीक 3 बजकर 06 मिनट पर सौराष्ट्र के तालाला क्षेत्र के पास 3.0 तीव्रता के भूकंप का झटका दर्ज किया गया। गांधीनगर स्थित इंस्टीट्यूट ऑफ सिस्मोलॉजिकल रिसर्च के मुताबिक इसका केंद्रबिंदु तालाला से 15 किलोमीटर उत्तर-उत्तरपूर्व में था। वैज्ञानिकों ने बताया कि कंपन का स्रोत 21.188N अक्षांश और 70.546E देशांतर पर स्थित था।

झटकों की खबर फैलते ही आसपास के गांवों—वलसाड, तापी जिले के व्यारा तालुका, करणजवेल और मीरपुर—में भी लोग घरों से निकलकर खुले स्थानों में खड़े दिखाई दिए। हल्की ठंड और रात की खामोशी के बीच अचानक आने वाली यह हलचल कई परिवारों को डराने के लिए काफी थी। कुछ स्थानों पर लोगों ने बताया कि बिस्तर हल्का सा हिलता महसूस हुआ, जबकि कुछ ने खिड़कियों में झनझनाहट भी सुनी। हालांकि डर का माहौल कुछ देर तक बना रहा, लेकिन राहत की बात यह रही कि भूकंप से कहीं भी किसी प्रकार के नुकसान या जनहानि की कोई सूचना नहीं है। स्थानीय प्रशासन ने तुरंत स्थिति की मॉनिटरिंग शुरू की और सभी क्षेत्रों में टीमों को अलर्ट पर रखा। अधिकारियों ने कहा कि अभी तक सब कुछ सामान्य है, लेकिन किसी भी संभावित आफ्टरशॉक को लेकर नजर बनाए रखी जा रही है।

रात के इन हल्के झटकों ने एक बार फिर लोगों को याद दिला दिया कि गुजरात का यह क्षेत्र भूकंपीय दृष्टि से संवेदनशील है, और सावधानी ही सबसे बड़ी सुरक्षा है।

कुंजापुरी से लौट रही तीर्थयात्रियों की बस गहरी खाई में समाई-पांच की मौत, 24 घायल; सड़क पर चीख-पुकार और अफरातफरी का माहौल

(जीएनएस)। देहरादून। उत्तराखंड के टिहरी जिले की शांत पहाड़ियों में रविवार दोपहर अचानक कोहराम मच गया, जब कुंजापुरी मंदिर के दर्शन कर लौट रहे श्रद्धालुओं से भरी एक बस अनियंत्रित होकर गहरी खाई में जा गिरी। देखते ही देखते खुशियों से भरा सफ़र मातम में बदल गया। हादसा इतना भीषण था कि मौके पर ही पांच यात्रियों की मौत हो गई, जबकि 24 यात्री घायल होकर सड़क पर बिखरे पड़े मिले। चीख-पुकार सुनकर स्थानीय लोग और राहगीर मदद के लिए दौड़ पड़े। दुर्घटना लगभग दोपहर 12 बजे ऋषिकेश–गंगोत्री राष्ट्रीय राजमार्ग पर नरेंद्रनगर के पास कुंजापुरी–हिंडोलाखाल क्षेत्र में हुई। तेज़ मोड़ पर बस का संतुलन बिगड़ा और वाहन सीधे पहाड़ी ढलान से नीचे जा गिरा। बस में कुल 29 लोग सवार थे—इनमें महाराष्ट्र, गुजरात और अन्य राज्यों से आए श्रद्धालु भी शामिल थे, जो सुबह मंदिर में पूजा-अर्चना कर लौट रहे थे।

भावनगर मंडल के 2 कर्मचारियों को महाप्रबंधक संरक्षा पुरस्कार से किया गया सम्मानित

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री विवेक कुमार गुप्ता ने मुंबई स्थित मुख्यालय में 11 कर्मचारियों को सम्मानित किया। इन कर्मचारियों ने अपने सतर्क कार्य से सुरक्षित रेल परिचालन सुनिश्चित किया। अक्टूबर-2025 माह में सतर्कता बरतने एवं संभावित घटनाओं को रोकने में महत्वपूर्ण योगदान देने के लिए इन कर्मचारियों को जी.एम. संरक्षा पुरस्कार प्रदान किया गया। सम्मानित कर्मचारियों में मुंबई सेंट्रल-2, वडोदरा-3, रतलाम-1, अहमदाबाद-2, राजकोट-1 एवं भावनगर मंडल से 2 कर्मचारी शामिल हैं। भावनगर मंडल से श्री दिलीप रजक (स्टेशन अधीक्षक – वांसजालिया) और श्री राम प्रसाद मीणा (ट्रैक मैंटेनर-रिबडा) को महाप्रबंधक संरक्षा पुरस्कार (GM Safety Award) से सम्मानित किया गया है।

वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी ने बताया कि पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री विवेक कुमार गुप्ता ने पुरस्कार प्राप्त कर्मचारियों की सतर्कता की सराहना करते हुए कहा कि वे सभी अनुकरणीय आदर्श हैं। कर्मचारियों की उच्च स्तर की प्रतिबद्धता एवं समर्पण ने सुरक्षित रेल संचालन में अहम भूमिका निभाई है। इनमें सुरक्षा से संबंधित विभिन्न क्षेत्रों जैसे टूटे बोल्ट का पता लगाना, कोच/इंजन के नीचे धुआं एवं चिंगारी का पता लगाना, पटरियों में दरार, ट्रेन के कोचों का अलग हो जाना, टूटा कपलर बॉडी, डिब्बों में लटकते हुए सामान, स्टेशन पर लगे शुरूआती आग को बुझाना, खुले फाटक से पहले आपातकालीन ब्रेक लगाकर दुर्घटना रोकना आदि शामिल हैं। मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा ने सभी कर्मचारियों को बधाई दी एवं प्रशंसा कर भविष्य में भी उत्कृष्ठ कार्य करते रहने हेतु प्रोत्साहित किया। पश्चिम रेलवे सभी सम्मानित कर्मचारियों की त्वरित सोच एवं सतर्कता की सराहना करती है, जिनकी वजह से संभावित दुर्घटनाओं को टाला जा सका।

महाप्रबंधक, पश्चिम रेलवे ने वडोदरा मंडल के तीन कर्मचारियों को संरक्षा पुरस्कार से सम्मानित किया

(जीएनएस)। रेलवे के संचालन में संरक्षा सर्वोपरि होती है और यह सुनिश्चित करने के लिए प्रत्येक कर्मचारी की सजगता एवं सतर्कता अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री विवेक कुमार गुप्ता ने वडोदरा मंडल के तीन रेल कर्मचारियों को उनके उत्कृष्ट कार्यों के लिए संरक्षा पुरस्कार से सम्मानित किया। ये पुरस्कार अक्टूबर 2025 के दौरान ड्यूटी पर रहते हुए सतर्कता दिखाने और संभावित दुर्घटनाओं को समय रहते टालने में अहम भूमिका निभाने के लिए प्रदान किए गए।

पुरस्कार प्राप्त करने वाले कर्मचारी (1) श्रीमती परमार हेमलता, पश्चिम रेलवे के वडोदरा मंडल के करचिया में (फिटर-I),के पद पर कार्यरत हैं। एक वैगन को शेंकवेयर प्लेट के कारण सिक के रूप में चिन्हित किया गया था। वैगन पुनः वापस आने के बाद, श्रीमती हेमलता परमार ने उसी वैगन में yoke टूटा हुआ पाया, जो समय पर न मिलने पर गंभीर दुर्घटना का कारण बन सकता था। उनकी सतर्कता और समय पर की गई कार्रवाई से एक बड़ी सुरक्षा समस्या टल गई।

(2) श्री एस. के. मल्ल रतनसिंह वागलाभाई मुढेल 'वडोदरा' में (ट्रेन मैनेजर), के पद पर कार्यरत हैं। दिनांक11.10.2025 को लगभग 15:38 बजे, जब ट्रेन प्लेटफॉर्म संख्या 6 से रवाना हो रही थी, उन्होंने देखा कि एक यात्री जनरल कोच में चढ़ने की कोशिश कर रहा था और अचानक फिसलकर कोच और प्लेटफॉर्म के बीच फंस गया। स्थिति की गंभीरता को समझते हुए श्रीमल्ल ने तुरंत ब्रेक प्रेशर छोड़कर ट्रेन को आपातकालीन रूप से रोका, जिससे एक संभावित जानलेवा दुर्घटना टल गई।उन्होंने पब्लिक और आरपीएफ स्टाफ की सहायता से घायल यात्री को सुरक्षित बाहर निकाला और तत्काल चिकित्सा सहायता के लिए ड्यूटी पर तैनात आरपीएफ को सौंपा। उनकी समय पर की गई कार्यवाही, सूझबूझ और यात्रियों की सुरक्षा के प्रति प्रतिबद्धता ने एक अमूल्यजीवन की रक्षा की।

(3) श्री देवांग देसाई 'वडोदरा' में (एलपीएम), के पद पर कार्यरत हैं। दिनांक 23.10.2025, को पालनपुर - अहमदाबाद सेक्शन के बीच ट्रेन संख्या 16507 के पश्चिम रेलवे के प्रधान मुख्य संरक्षा अधिकारी द्वारा फुट-प्लेटिंग निरीक्षण के दौरान, उनका कार्य उत्कृष्ट पाया गया। हाथ के इशारों से संकेत देने की आदत, सड़क और सेक्शन की जानकारी, कार्य के दौरान टीएसआर और पीएसआर का पालन, सीटी बजाने की आदत और ड्राइविंग तकनीक, ये सभी बहुत उच्च स्तर के पाए गए। चालकदल ने पूरी यात्रा के दौरान सतर्कता, अनुशासन और सुरक्षित ड्राइविंग का प्रदर्शन किया। महाप्रबंधक श्री विवेक कुमार गुप्ता ने पुरस्कार प्राप्त करने वाले कर्मचारियों की सतर्कता की सराहना करते हुए कहा कि ये सभी कर्मचारी अपने कार्य के प्रति समर्पित रहकर दूसरों के लिए प्रेरणास्रोत बने हैं।

पश्चिम रेलवे को अपने ऐसे कर्मचारियों पर गर्व है, जो विषम परिस्थितियों में भी धैर्य और समझदारी के साथ कार्य करते हैं और रेल संचालन की सुरक्षा सुनिश्चित करते हैं। यह सम्मान न केवल उनके व्यक्तिगत प्रयासों की सराहना है, बल्कि यह पश्चिम रेलवे की उस संस्कृति को भी प्रतिबिंबित करता है, जहाँ संरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाती है।

सोना वायदा में 851 रुपये और चांदी वायदा में 660 रुपये की गिरावट: क्रूड ऑयल वायदा 22 रुपये नरम

(जीएनएस)। कमोडिटी वायदाओं में 30591.75 करोड़ रुपये और कमोडिटी ऑप्शंस में 212326.54 करोड़ रुपये का दर्ज हुआ टर्नओवरः सोना-चांदी के वायदाओं में 23432.66 करोड़ रुपये का हुआ कारोबारः बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स फ्यूचर्स 29263 पॉइंट के स्तर पर

मुंबईः देश के अग्रणी कमोडिटी डेरिवेटिव्स एक्सचेंज एमसीएक्स पर कमोडिटी वायदा, ऑप्शंस और इंडेक्स फ्यूचर्स में 242928.6 करोड़ रुपये का टर्नओवर दर्ज हुआ। कमोडिटी वायदाओं में 30591.75 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ, जबकि कमोडिटी ऑप्शंस में 212326.54 करोड़ रुपये का नॉशनल टर्नओवर हुआ। बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स का दिसंबर वायदा 29263 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था। कमोडिटी ऑप्शंस में कुल प्रीमियम टर्नओवर 1930.92 करोड़ रुपये का हुआ।

कीमती धातुओं में सोना-चांदी के वायदाओं में 23432.66 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। एमसीएक्स सोना दिसंबर वायदा सत्र के आरंभ में 122743 रुपये के भाव पर खूलकर, 123574 रुपये के दिन के उच्च और 122605 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 124191 रुपये के पिछले बंद के सामने 851 रुपये या 0.69 फीसदी लुढ़ककर 123340 रुपये प्रति 10 ग्राम बोला गया। गोल्ड-गिनी नवंबर वायदा 210 रुपये या 0.21 फीसदी घटकर 99872 रुपये प्रति 8 ग्राम के भाव पर ट्रेड हो रहा था। गोल्ड-पेटल नवंबर वायदा 53 रुपये या 0.42 फीसदी घटकर 12497 रुपये प्रति 1 ग्राम के भाव पर ट्रेड हो रहा था। सोना-मिनी दिसंबर वायदा 122600 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 123410 रुपये और नीचे में 122257 रुपये पर पहुंचकर, 694 रुपये या 0.56 फीसदी घटकर 123155 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर ट्रेड हो रहा था।

गोल्ड-टेन नवंबर वायदा प्रति 10 ग्राम 123388 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 123638 रुपये और नीचे में 121965 रुपये पर पहुंचकर, 123973 रुपये के पिछले बंद के सामने 583 रुपये या 0.47 फीसदी घटकर 123390 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर ट्रेड हो रहा था।

चांदी के वायदाओं में चांदी दिसंबर वायदा 153913 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 154317 रुपये और नीचे में 152415 रुपये पर पहुंचकर, 154151 रुपये के पिछले बंद के सामने 660 रुपये या 0.43 फीसदी घटकर 153491 रुपये प्रति किलो के भाव पर ट्रेड हो रहा था। इनके अलावा चांदी-मिनी नवंबर वायदा 1683 रुपये या 1.07 फीसदी गिरकर 155375 रुपये प्रति किलो के भाव पर पहुंचा। जबकि चांदी-माइक्रो नवंबर वायदा 1630 रुपये या 1.04 फीसदी लुढ़ककर 155403 रुपये प्रति किलो बोला गया।

मेटल वर्ग में 2308.18 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। तांबा नवंबर वायदा 2.85 रुपये या 0.28 फीसदी गिरकर 1000.2 रुपये प्रति किलो हुआ। जबकि जस्ता नवंबर वायदा 3.8 रुपये या 1.24 फीसदी गिरकर 302.45 रुपये प्रति किलो हुआ। इसके सामने एल्यूमीनियम नवंबर वायदा 5 पैसे या 0.02 फीसदी की नरमी के साथ 266.1 रुपये प्रति किलो पर आ गया। जबकि सीसा नवंबर वायदा 85 पैसे या 0.47 फीसदी घटकर 180 रुपये प्रति किलो के भाव पर ट्रेड हो रहा था।

इन जिंसों के अलावा कारोबारियों ने एनर्जी सेगमेंट में 4843.95 करोड़ रुपये के सौदे किए। एमसीएक्स क्रूड ऑयल दिसंबर वायदा सत्र के आरंभ में 5194 रुपये के भाव पर खूलकर, 5215 रुपये के दिन के उच्च और 5144 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 22 रुपये या 0.42 फीसदी गिरकर 5175 रुपये प्रति बैरल हुआ। जबकि क्रूड ऑयल-मिनी दिसंबर वायदा 15 रुपये या 0.29 फीसदी गिरकर 5182 रुपये प्रति बैरल के भाव पर पहुंचा। इनके अलावा नैचुरल गैस नवंबर वायदा सत्र के आरंभ में 404.9 रुपये के भाव पर खूलकर, 408.6 रुपये के दिन के उच्च और 396.9 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 415 रुपये के पिछले बंद के सामने 12.3 रुपये या 2.96 फीसदी गिरकर 402.7 रुपये प्रति एमएमबीटीयू हुआ। जबकि नैचुरल गैस-मिनी नवंबर वायदा 12.7 रुपये या 3.06 फीसदी गिरकर 402.1 रुपये प्रति एमएमबीटीयू हुआ। कृषि जिंसों में मेंथा ऑयल नवंबर वायदा सत्र के आरंभ में 919.2 रुपये के भाव पर खूलकर, 2.4 रुपये या 0.27 फीसदी की गिरावट के साथ 900 रुपये प्रति किलो के भाव पर कारोबार कर रहा था।

कारोबार की दृष्टि से एमसीएक्स पर सोना के विभिन्न अनुबंधों में 16190.09 करोड़ रुपये और चांदी के विभिन्न अनुबंधों में 7242.57 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। इसके अलावा तांबा के वायदाओं में 946.81 करोड़ रुपये, एल्यूमीनियम और एल्यूमीनियम-मिनी के वायदाओं में 178.34 करोड़ रुपये, सीसा और सीसा-मिनी के वायदाओं में 55.32 करोड़ रुपये, जस्ता और जस्ता-मिनी के वायदाओं में 1127.38 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ।

इन जिंसों के अलावा क्रूड ऑयल और क्रूड ऑयल-मिनी के वायदाओं में 537.42 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। जबकि नैचुरल गैस और नैचुरल गैस-मिनी के वायदाओं में 4281.74 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ। मेंथा ऑयल के वायदा में 5.22 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। जबकि कॉटन केंडी के वायदाओं में 0.69 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ। ओपन इंटरेस्ट सोना के वायदाओं में 17320 लोट, सोना-मिनी के वायदाओं में 65301 लोट, गोल्ड-गिनी के वायदाओं में 22934 लोट, गोल्ड-पेटल के वायदाओं में 322238 लोट और गोल्ड-टेन के वायदाओं में 35157 लोट के स्तर पर था। जबकि चांदी के वायदाओं में 29284 लोट, चांदी-मिनी के वायदाओं में 49420 लोट और चांदी-माइक्रो वायदाओं में 149803 लोट के स्तर पर था। क्रूड ऑयल के वायदाओं में 20566 लोट और नैचुरल गैस के वायदाओं में 22480 लोट के स्तर पर था। इंडेक्स फ्यूचर्स में बुलडेक्स दिसंबर वायदा सत्र के आरंभ में 29839 पॉइंट पर खूलकर, 29839 के उच्च और 29100 के नीचले स्तर को छूकर, 81 पॉइंट बढ़कर 29263 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था।

कमोडिटी ऑप्शंस ऑन फ्यूचर्स में क्रूड ऑयल दिसंबर 5200 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति बैरल 8.2 रुपये की गिरावट के साथ 180.5 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस दिसंबर 420 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 8.4 रुपये की गिरावट के साथ 28.45 रुपये हुआ।

सोना नवंबर 125000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 448.5 रुपये की गिरावट के साथ 329.5 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी नवंबर 160000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 233.5 रुपये की गिरावट के साथ 289 रुपये हुआ। तांबा दिसंबर 1000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 2 रुपये की गिरावट के साथ 20.44 रुपये हुआ। जस्ता दिसंबर 305 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 1.07 रुपये की बढ़त के साथ 2.67 रुपये हुआ। पुट ऑप्शंस में क्रूड ऑयल दिसंबर 5200 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति बैरल 2 रुपये की बढ़त के साथ 196.5 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस दिसंबर 420 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 5.6 रुपये की बढ़त के साथ 34.05 रुपये हुआ। सोना नवंबर 121000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 57.5 रुपये की गिरावट के साथ 206.5 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी नवंबर 150000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 197.5 रुपये की गिरावट के साथ 580 रुपये हुआ। तांबा दिसंबर 1000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 1.05 रुपये की बढ़त के साथ 12.04 रुपये हुआ। जस्ता दिसंबर 290 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 60 पैसे की नरमी के साथ 2.5 रुपये हुआ।

गुजरात के शहरों में प्लास्टिक मुक्त स्वदेशी मेलों से 'वोकल फॉर लोकल' को प्रोत्साहन

- 2025 में राज्य के 16 शहरों में आयोजित स्वदेशी मेलों में 10 करोड़ रुपए से अधिक का कारोबार हुआ
- मेलों में दो महीने के दौरान 40.50 लाख से अधिक लोग उमड़े
- स्वदेशी और आत्मनिर्भर भारत ही विकसित भारत के निर्माण का राजमार्ग है : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

(जीएनएस)। गांधीनगर : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने देश के नागरिकों से आत्मनिर्भर भारत के निर्माण के लिए 'हर घर स्वदेशी' अभियान में उत्साहपूर्वक शामिल होने का आह्वान किया है। गुजरात में माननीय मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में यह अभियान सफलतापूर्वक जारी है। मुख्यमंत्री के मार्गदर्शन मे राज्य सरकार ने ग्रामीण कारीगरों, हस्त शिल्प कलाकारों और छोटे उद्योगों को समर्थन देने के लिए अनेक नई पहलें शुरू की हैं। 'गुजरात आत्मनिर्भर यात्रा', 'जी-मैत्री योजना' और 'महिला उद्योग सहाय योजना' जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से राज्य में स्वदेशी उत्पादों को एक नई ऊर्जा मिल रही है। राज्य में तहसील और जिला स्तर पर 'स्वदेशी मेला', 'वॉक फॉर स्वदेशी' और 'वोकल फॉर लोकल' जैसे जनजागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन कर इस अभियान को जनभागीदारी का स्वरूप दिया गया है। इस अभियान को आगे बढ़ाते हुए शहरी विकास वर्ष 2025 के अंतर्गत राज्य के 16 शहरों में स्वदेशी मेलों का आयोजन किया गया। 10 सितंबर से 31 अक्टूबर, 2025 के दौरान 16 शहरों में 'प्लास्टिक मुक्त' स्वदेशी मेले आयोजित किए गए, जिनमें 40.50 लाख से अधिक लोगों ने भ्रमण किया। इन मेलों में 10 करोड़ रुपए से अधिक की बिक्री हुई। राज्य के भावनगर, गांधीनगर, जामनगर, जूनागढ़, राजकोट, सूरत, वडोदरा, आणंद, गांधीधाम, मेहसाणा, मोरबी, नडियाद, नवसारी, पोरबंदर, सुरेन्द्रनगर और वापी में स्वदेशी मेलों का आयोजन किया गया। इन मेलों के आयोजन में महानगर पालिका क्षेत्र में रहने वाले नागरिकों, स्वयं सहायता समूहों, स्थानीय कारीगरों और व्यवसायियों ने हिस्सा लिया।

540 स्वयं सहायता समूहों को 2707 स्टॉल आवंटित किए गए

इन मेलों में स्वदेशी वस्तुओं की बिक्री को प्रोत्साहन देने के लिए 540 स्वयं सहायता समूहों को 2707 स्टॉल आवंटित किए गए थे। मेला भ्रमण करने आने वाले लोगों के मनोरंजन के लिए गेम शो, संगीत कार्यक्रम, लोक डायरा, पपेट शो (कठपुतली शो) और नाटकों का भी आयोजन किया गया था। आगंतुकों को स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग के लिए प्रोत्साहित किया गया। दिसंबर महीने में अहमदाबाद में स्वदेशी को बढ़ावा देने वाले शॉपिंग फेस्टिवल के साथ ही आने वाले समय में नगर पालिका क्षेत्रों में स्वदेशी मेले आयोजित किए जाएंगे। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने देश की जनता पर पूर्ण विश्वास व्यक्त करते हुए दृढ़तापूर्वक कहा है कि स्वदेशी और आत्मनिर्भर भारत ही विकसित भारत के निर्माण का राजमार्ग है। आने वाले समय में देश का प्रत्येक नागरिक 'वोकल फॉर लोकल' का वाहक बनेगा और हर नागरिक स्वदेशी के मंत्र को आत्मसात करेगा। 2047 में जब भारत अपनी आजादी की 100वीं वर्षगांठ का जश्न मनाएगा, तब भारत अवश्य एक विकसित राष्ट्र होगा।

पश्चिम रेलवे
इलेक्ट्रिकल काम
Sr. DEE/P/BCT, वेस्टर्न रेलवे, मुंबई सेंट्रल, मुंबई - 400008 टेंडर नोटिस नंबर: EL-81-930-WA-55, तारीख 19-11-2025 आमंत्रित करता है। काम और जगह: मुंबई डिवीजन - 1300 रेलवे क्वार्टर में इलेक्ट्रिकल रिवायरिंग, मीटर रूम वायरिंग और मेन केबल बदलकर सेफ्टी में सुधार। काम की लगभग लागत: ₹ 3,86,23,387/- EMD: ₹ 3,43,100/- जमा करने की तारीख और समय: तारीख 19.12.2025 के 15:00 बजे तक। खुलने की तारीख और समय: तारीख 19.12.2025 को 15:30 बजे। ज़्यादा जानकारी के लिए कृपया हमारी वेबसाइट www.ireps.gov.in पर जाएं।
0817
हमें लाइक करें: facebook.com/WesternRly

“शाहीन बाग में NCB-पुलिस का छापा अंतरराष्ट्रीय ड्रग रैकेट का पर्दाफाश दुबई से चल रहा ऑपरेशन”

(जीएनएस)। नई दिल्ली। नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो (NCB) और दिल्ली पुलिस ने संयुक्त अभियान के तहत अंतरराष्ट्रीय ड्रग्स रैकेट के खिलाफ एक बड़ा छापा मारा है। यह कार्रवाई उस समय हुई जब नोएडा से गिरफ्तार हुए 25 वर्षीय शेन वारिस ने पूरे रैकेट का राज खोल दिया। पूछताछ में शेन ने अपने सरगना का नाम भी बताया—आरिफ सिद्दीकी, जो फिलहाल दुबई में है और वहीं से भारत में ड्रग्स नेटवर्क संचालित कर रहा है। एनसीबी और दिल्ली पुलिस स्पेशल सेल की टीम ने अब शाहीन बाग और जामिया नगर स्थित आरिफ के घर पर छापा मारा। शाहीन बाग थाना क्षेत्र के अबुल फजल एन्क्लेव की बुशरा बिल्डिंग में दोनों एजेंसियों ने रेड कर आरोपी के कनेक्शन की जांच शुरू की। पुलिस ने बताया कि इस रैकेट के माध्यम से मेथाम्फेटामाइन और अन्य ड्रग्स की तस्करी की जा रही थी, जिसकी कुल कीमत

लगभग 262 करोड़ रुपये मानी जा रही है। पूछताछ और जांच के बाद अब तक दो लोग गिरफ्तार किए जा चुके हैं, और रैकेट के अन्य सदस्यों की तलाश जारी है।

शेन वारिस के अनुसार, रैकेट का सरगना आरिफ सिद्दीकी दुबई में बैठकर पूरी ऑपरेशन चेन को नियंत्रित करता है। शेन ने पुलिस को एस्थर किनिमी नामक एक महिला के बारे में भी जानकारी दी, जिसने पहले ड्रग कंसाइनमेंट भेजने में अहम भूमिका निभाई थी। पूछताछ के दौरान उसके मोबाइल नंबर, पते और नेटवर्क की जानकारी सामने आई। इसके बाद पुलिस ने उस महिला को भी गिरफ्तार कर लिया। एनसीबी ने बताया कि शेन वारिस से मिली जानकारी के आधार पर अब पूरी सप्लाई चेन, फाइनेंशियल ट्रांजैक्शन, क्रिप्टो पेमेंट्स और स्टोरेज नेटवर्क की जांच की जा रही है। एजेंसियां इस रैकेट से जुड़े अन्य लोगों की तलाश में भी जुटी हैं। विशेष रूप से कार्टेल का लीडर आरिफ, जो पिछले साल दिल्ली में NCB द्वारा 82.5 किलोग्राम कोकीन जब्त किए जाने के मामले में भी वांटेड था, इस समय दुबई से संचालन कर रहा है। पड़ोसियों के अनुसार, आरिफ पिछले छह महीनों से भारत नहीं आया है, लेकिन उसकी हवाई और डिजिटल मौजूदगी से यह साबित होता है कि नेटवर्क पूरी तरह सक्रिय है। छापेमारी के दौरान पुलिस ने सुरक्षा व्यवस्था कड़ी कर दी थी, और आसपास के इलाके में टीमों को तैनात किया गया था। विशेषज्ञों के अनुसार, अंतरराष्ट्रीय ड्रग रैकेट का यह पर्दाफाश देश में नशीली दवाओं के बढ़ते खतरे और इसके वैश्विक कनेक्शन की गंभीरता को दर्शाता है। एनसीबी और पुलिस की संयुक्त कार्रवाई से उम्मीद जताई जा रही है कि इस ऑपरेशन के बाद पूरे नेटवर्क का सफाया किया जा सकेगा और ड्रग्स की तस्करी में शामिल अन्य गिरोहों पर भी अंकुश लगाया जा सकेगा।

“16 BLO की मौत, 60 पर FIR और प्रशासन का दबाव: क्या SIR बन रही कर्मचारियों के लिए डेडलाइन?”

(जीएनएस)। नई दिल्ली। लोकतंत्र की नींव मजबूत बनाने के लिए शुरू किया गया स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन (SIR) अभियान अब गंभीर बहस का विषय बन गया है। देशभर में मतदाता सूची को अपडेट करने के लिए घर-घर जाकर काम करने वाले बूथ लेवल अधिकारियों (BLO) पर भारी दबाव डाला जा रहा है। अभियान की प्रक्रिया में आए तनाव और दबाव ने कई BLO की जान ले ली है, जबकि प्रशासन ने अन्य मामलों में FIR दर्ज कर जिम्मेदारियों की कड़ी निगरानी शुरू कर दी है।

राहुल गांधी ने सोशल मीडिया पर इस अभियान को लेकर गंभीर आरोप लगाए हैं। उनके अनुसार तीन हफ्तों में 16 BLO अपनी जान गंवा चुके हैं। उनका कहना है कि भारत डिजिटल तकनीक में विश्व अग्रणी है, लेकिन चुनाव आयोग अब भी नागरिकों से 22 साल पुरानी मतदाता सूची के कागजी पन्ने पलटकर नाम ढूंढने की प्रक्रिया करा रहा है। राहुल गांधी ने इसे जनता पर बोझ डालने और लोकतंत्र में असली मतदाता को परेशान करने की कोशिश बताया। वहीं नोएडा में 60 से अधिक BLO और सात

पर्यवेक्षकों के खिलाफ FIR दर्ज की गई है। आरोप है कि उन्होंने ड्यूटी पर समय पर नहीं पहुंचे या वरिष्ठ अधिकारियों के निर्देशों का पालन नहीं किया। बहराइच से मिली खबरों के अनुसार दो BLO को निलंबित किया गया है और एक के खिलाफ आपराधिक रिपोर्ट दर्ज की गई है। प्रशासन का कहना है कि मतदाता सूची को सही रखना बेहद जरूरी है, इसलिए किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। एसआईआर में BLO की जिम्मेदारी सबसे अहम है। उन्हें घर-घर जाकर मतदाताओं के फॉर्म भरवाने, दस्तावेज जांचने, रिकॉर्ड मिलान करने और गलत प्रविष्टियां हटाने जैसे काम सीमित समय में करना पड़ते हैं। कई जगह कर्मचारियों को लंबे समय तक बिना आराम किए काम करना पड़ रहा है। लखनऊ में एक BLO की मौत की रिपोर्ट के बाद कर्मचारियों ने आरोप लगाया कि अत्यधिक काम और तनाव उनकी जान का कारण बना। प्रशासन इसे ड्यूटी का हिस्सा बताता है और कहता है कि यह प्रक्रिया लोकतंत्र के लिए जरूरी है।

SIR फेज-II में BLO की जिम्मेदारियां पहले से भी बढ़ गई हैं। इस बार उन्हें:

- पुराने मतदाता रिकॉर्ड के साथ फॉर्म-6, फॉर्म-8 और अन्य दस्तावेज़ मिलान करने हैं।
- घर-घर जाकर वास्तविक मतदाताओं का रिकॉर्ड अपडेट करना है।
- डुप्लीकेट, मृतक या गलत प्रविष्टियों को हटाकर मतदाता सूची को सटीक करना है।

विशेषज्ञों का कहना है कि BLO पर बढ़ता दबाव, सीमित समय और लगातार निगरानी उन्हें मानसिक रूप से कमजोर कर सकता है। सवाल यह उठता है कि क्या लोकतंत्र की सुरक्षा और मतदाता सूची की शुद्धता के नाम पर कर्मचारियों की सुरक्षा और स्वास्थ्य को नजरअंदाज किया जा रहा है। SIR की प्रक्रिया लोकतंत्र के लिए महत्वपूर्ण है, लेकिन BLO की बढ़ती मौतों और FIR के बाद यह स्पष्ट होता है कि अभियान के प्रबंधन में संतुलन और पारदर्शिता की कमी है। अब यह देखा जाएगा कि प्रशासन BLO को सुरक्षित और समर्थ वातावरण प्रदान करने में कितनी सफलता हासिल करता है और क्या इस अभियान की “डेडलाइन” BLO के लिए सुरक्षित बन सकती है।

लव, अफेयर और मर्डर कब्र के अंदर छिपे सच ने हिलाकर रख दिया शहर

(जीएनएस)। नई दिल्ली। वडोदरा में रविवार का दिन लोगों के दिलों को सन्न कर गया, जब एक ऐसी घटना का पर्दाफाश हुआ जिसने मोहब्बत, लालच और विश्वासघात की सारी हदें पार कर दीं। शहर में फैली अफवाहें उस समय सच साबित हो गईं जब कब्र के भीतर से निकले एक शव ने बता दिया कि मौत हार्ट अटैक से नहीं, बल्कि एक साज़िश के तहत गला घोंटकर दी गई थी। यह कहानी किसी फिल्म की तरह लगती है, लेकिन इसका हर किरदार, हर मोड़ और हर दर्दनाक पल बिल्कुल असली था।

इरशाद बंजारा, उम्र 32, जिसकी जिंदगी पांच दिन पहले अचानक खत्म हो गई थी, उसकी मौत को शुरुआत में परिवार ने अल्लाह की मर्जी मानकर स्वीकार कर लिया था। उसकी पत्नी गुलबानू ने बताया था कि रात में उसे बेचैनी हुई, शायद हार्ट अटैक आया होगा। परिवार ने बिना देरी किए उसे दफना दिया। सबको लगा कि मामला यहीं खत्म हो गया, लेकिन सच कब्र के भीतर दफन होकर भी हमेशा नहीं

बैठा रहता। इरशाद के दफनाने के दिन ही घरवालों को पहली बार शक की सुई चुभी। गुलबानू बार-बार किसी नंबर पर फोन कर रही थी। उसकी आवाज़ में घबराहट थी और उसका रवैया किसी दुःखी पत्नी जैसा बिल्कुल नहीं। घरवालों ने उसके मोबाइल की कॉल डिटेल देखी तो पाया कि एक ही नंबर से रातभर गहरी बातचीत हुई। सवाल उठे, जवाब टाले गए, और कुछ देर बाद परिवार का भरोसा टूटने लगा।

21 नवंबर को वे जेपी रोड पुलिस स्टेशन पहुंचे और सच्चाई जानने की मांग की। मामला अब संवेदनशील हो चुका था। रविवार सुबह मजिस्ट्रेट की मौजूदगी में कब्र खोदी गई। मिट्टी की गंध, नम हवा और कब्र से निकाले गए शव ने वहां मौजूद हर आंख को पथरा दिया। पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट ने वह राज खोल दिया जो अंधेरी रात में छुपाया गया था—इरशाद की मौत हार्ट अटैक से नहीं हुई थी, उसका गला दबाया गया था।

यह खुलासा होते ही पुलिस ने गुलबानू को गिरफ्तार किया। पूछताछ शुरू हुई और उसने वह कहानी कबूल कर ली, जिसने इंसानी रिश्तों को शर्मिंदा कर दिया। लगभग एक साल पहले वह उत्तर प्रदेश के एक टेलर तौसीफ के संपर्क में आई थी। बात-बात में मुलाकातें बढ़ीं और रिश्ते की सीमाएँ टूटती चली गईं। दोनों ने पहले घर से भागने का सोचा, लेकिन फिर तीनों—गुलबानू, उसका प्रेमी तौसीफ और तौसीफ का साथी मामा—ने मिलकर इरशाद को रास्ते से हटाने का फैसला किया।

18 नवंबर की रात गुलबानू ने इरशाद के खाने में नशीला पदार्थ मिलाकर उसे बेहोश किया। तीनों पहले से प्लान बनाकर इंतज़ार कर रहे थे। उसी रात तौसीफ और मामा घर में घुसे और गुलबानू ने अपने ही दुपट्टे से पति का गला कस दिया। सबकुछ मिनटों में खत्म हो गया। तीनों चुपचाप रात के अंधेरे में गायब हो गए।

सुबह गुलबानू ने ड्रामा किया। इरशाद के परिवार को फोन कर बताया कि वह रात में असहज था। परिवार जब अस्पताल ले जाने को बोला तो उसने बहाना बनाकर फोन काट दिया। अगले दिन शव मिला और मौत की कहानी वही बनाई गई जो उसे सबको सुनानी थी।

लेकिन सच की आवाज़ बहुत दूर तक जाती है। इरशाद को दफनाने के बाद उसके परिवार के संदेह, फोन की कॉल डिटेल, और गुलबानू की बदलती हरकतें आखिर आखिरकार सब कुछ बता गईं।

DCP मंजीता वंजारा ने बताया कि तीनों पिछले तीन महीने से हत्या की योजना बना रहे थे। गुलबानू को गिरफ्तार कर लिया गया है जबकि तौसीफ और मामा की तलाश में टीमें भेजी गई हैं।

आज वडोदरा में लोग इसी बात की चर्चा कर रहे हैं कि कैसे एक पति, जो अपनी पत्नी और तीन बच्चों के लिए जी रहा था, मोहब्बत के नाम पर रची एक साजिश का निशाना बन गया। उसकी कब्र भले ही मिट्टी से ढक दी गई थी, लेकिन सच की मिट्टी हमेशा हल्की ही रहती है हवा लगते ही उड़ जाती है।

“सपनों भरी शादी से कुछ ही महीने पहले 9वीं मंजिल से छलांग: सूरत में फिजियोथेरेपिस्ट की दुखद मौत”

(जीएनएस)। सूरत। सपनों और खुशियों से भरी जिंदगी अचानक एक क्षण में उजड़े जाने की कहानी 21 नवंबर की शाम सामने आई, जब 28 साल की फिजियोथेरेपिस्ट राधिका जमनभाई कोटाडिया ने सरथाना के चाय पार्टनर कैफे की 9वीं मंजिल से छलांग लगा दी। दो महीने बाद होने वाली शादी की तैयारियों और परिवार के बीच खुशियों के बीच यह घटना एक डरावना मातम बनकर शहर की जिंदगी में घुल गई।

राधिका जामनगर जिले के कलावड तालुका के मोती भेगड़ी गांव की रहने वाली थीं। फिलहाल वह अपने परिवार के साथ सूरत के श्यामधाम मंदिर के पास स्थित विश्व रेजीडेंसी में रह रही थीं। उनके परिवार में माता-पिता और एक भाई हैं। पिता डायमंड फैक्ट्री में जेम आर्टिस्ट के रूप में काम करते हैं, जबकि राधिका सूरत के जकातनाका में स्थित विकास शॉपर्स की पहली मंजिल पर अपना श्रीजी फिजियो क्लिनिक चलाती थीं। छह महीने पहले राधिका की सगाई

हुई थी और 19 फरवरी 2026 को उनकी शादी होने वाली थी। रोज़मर्रा की तरह 21 नवंबर को भी राधिका अपने क्लिनिक गई थीं। दोपहर में क्लिनिक लौटने के बाद उन्होंने शाम को अपने ऑफिस स्टाफ को योगी चौक जाने की बात कहकर निकली। वह उसी समय सरथाना जकातनाका के पास स्थित चाय पार्टनर कैफे की 9वीं मंजिल पर पहुँची। आसपास मौजूद लोगों के अनुसार, राधिका अचानक कुर्सी से उठीं, रेलिंग पर चढ़ीं और नीचे कूद गईं। ज़ोरदार आवाज सुनकर आसपास मौजूद लोग दौड़े, लेकिन तब तक राधिका की मौत हो चुकी थी। मौके पर ही पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए स्मीमेर हॉस्पिटल भेज दिया। पुलिस की शुरुआती जांच में पता चला कि राधिका ने अपने मंगेतर से हुए किसी विवाद के बाद यह कदम उठाया। पुलिस ने मृतक का फोन जब्त कर लिया है और परिवार वालों के बयान के आधार पर जांच जारी है। परिवार का कहना है कि राधिका हमेशा खुशमिजाज और जिम्मेदार थीं, और इस तरह अचानक उनके जाने की खबर से पूरा परिवार स्तब्ध है। राधिका के निधन से न केवल परिवार बल्कि उनके क्लिनिक और आसपास के लोग भी सदमे में हैं। शहर के लोग इस घटना पर गहरा दुख और चिंता व्यक्त कर रहे हैं। यह हादसा याद दिलाता है कि मानसिक दबाव और व्यक्तिगत तनाव कभी-कभी सबसे आश्चर्यजनक और दुखद तरीके से सामने आ सकते हैं।

“सीबीआई का छापा, साइबर गुट पर करारी चोट: लखनऊ में फर्जी कॉल सेंटर ध्वस्त, मास्टरमाइंड विकास निम्मार गिरफ्तार”

(जीएनएस)। लखनऊ की शांत दिखने वाली गलियों में कई महीनों से एक ऐसा खेल चल रहा था जिसका धागा सीधे अंतरराष्ट्रीय साइबर अपराधियों की दुनिया से जुड़ता था। अमेरिकी नागरिकों को निशाना बनाकर उनके खातों से पैसे झटकने वाला यह रैकेट बड़े ही सुनियोजित तरीके से चल रहा था, और इसका संचालन करने वाला था विकास कुमार निम्मार—एक ऐसा नाम जिसे एजेंसियां काफी समय से खोज रही थीं। अंततः वह दिन आ ही गया जब केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो ने अपनी गुप्त कार्रवाई में इस पूरे जाल को झटके से तोड़ दिया और शहर के बीचोंबीच चल रहे फर्जी कॉल सेंटर को बंद करा दिया।

सीबीआई इस मामले पर पिछले एक साल से लगातार नज़र बनाए हुए थी। सितंबर 2024 में दर्ज किए गए केस के दौरान एजेंसी को पता चला था कि यह नेटवर्क कई शहरों में विस्तृत है। पुणे, हैदराबाद और विशाखापत्तनम में वीसी इंफ्रोमेट्रिक्स प्राइवेट लिमिटेड के नाम से संचालित चार फर्जी कॉल सेंटर पहले ही ध्वस्त किए जा चुके थे, लेकिन मास्टरमाइंड विकास निम्मार को पकड़ना मुश्किल साबित हो रहा था। उसके फरार होने की अवधि इतनी लंबी हो गई कि सीबीआई को पुणे की अदालत से

उसके खिलाफ वारंट जारी करवाना पड़ा। यह वह समय था जब जांचकर्ता 24 घंटे लगातार उसकी गतिविधियों पर नज़र रख रहे थे, और आखिरकार 20 नवंबर की सुबह, लखनऊ स्थित उसके आवास पर दबिश देकर उसे गिरफ्तार कर लिया गया। गिरफ्तारी के बाद जब एजेंसियों ने उसके घर की तलाशी ली, तो वहां से जो मिला वह इस पूरे नेटवर्क की गहराई को समझने के लिए काफी था। 14 लाख रुपये की नकदी, कई मोबाइल फोन, विदेशी नागरिकों को ठगने से जुड़े दस्तावेज, और डिजिटल अपराधों के सूत्र—ये सब एक ऐसी कहानी बयान कर रहे थे जिसमें लालच, तकनीक और धोखे का ताना-बाना एक साथ बुना गया था। लेकिन सबसे चौंकाने वाली खोज उसके घर से कुछ ही दूरी पर मिली, जहाँ वह गुपचुप तरीके से एक और अवैध कॉल सेंटर चला रहा था। सीबीआई की टीम वहाँ पहुँची और उसे मौके पर ही बंद करा दिया। उस कॉल सेंटर की तलाशी में 52 लैपटाप बरामद किए गए, जो उस अपराध जगत की रीढ़ साबित हुए जिसमें बैठकर प्रशिक्षित कर्मचारी विदेशों के नागरिकों को कॉल करते, खुद को किसी अमेरिकी एजेंसी के प्रतिनिधि के रूप में पेश करते और धीरे-धीरे अपने शिकार को वित्तीय जाल में फँसा लेते। वहाँ से मिले भारी डिजिटल सबूत यह दिखाते हैं कि किस तरह भारत की टेक्नोलॉजी का एक छोटा-सा हिस्सा अवैध तरीके से अंतरराष्ट्रीय साइबर अपराधियों का हथियार बन रहा था। रिकॉर्डेड कॉल, डाटा एक्सट्रैक्शन सॉफ्टवेयर, स्पूफिंग तकनीक और फर्जी आईपी—ये सब एक ऐसे षड्यंत्र का हिस्सा थे जिसे वर्षों तक बिना पकड़े चलाया गया।

गिरफ्तारी के बाद सीबीआई के अधिकारियों ने साफ कर दिया है कि यह तो बस शुरुआत है। साइबर अपराध जिस तरह लगातार सीमाएं पार कर रहा है और अपनी जड़ें फैला रहा है, उस पर प्रहार करने के लिए एजेंसी अब दूसरे सहयोगियों, वित्तीय चैनलों और डेटा-ट्रेल्स की जांच में लगी हुई है। यह संभावना भी जताई जा रही है कि इस नेटवर्क का संबंध विदेशों में बैठे बड़े पैमाने के साइबर गिरोहों से हो सकता है।

“अयोध्या में भक्ति की लहर: रामधुनों से गूंजा शहर, पीएम मोदी आज फहराएंगे मुख्य शिखर पर ध्वज-पताका”

(जीएनएस)। अयोध्या की सुबह रविवार को सामान्य दिनों से अलग थी। हवा में एक अनोखा कंपन था, जैसे पूरी रामनगरी अपने भीतर कोई प्राचीन ऊर्जा फिर से जगाती हो। सड़कों पर चलते लोग, दुकानों की छतों से झाँकते बच्चे, मंदिर की सीढ़ियों पर बैठे साधु—हर कोई यह महसूस कर रहा था कि शहर का वातावरण अचानक बदल गया है। और सचमुच ऐसा हुआ भी था। नगर निगम अयोध्या ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आगमन से ठीक एक दिन पहले पूरे शहर में 100 सार्वजनिक संबोधन सिस्टम के माध्यम से लगातार रामधुनों का प्रसारण शुरू करा दिया था, और उसी क्षण से राम की नगरी मानो किसी विशाल प्राचीन यज्ञ के मंत्रोच्चार में डूब गई हो।

इन स्पीकरों से निकलते हर सुर, हर ताल के साथ शहर की धड़कनें मानो एक लय बनाती चली जा रही थीं। ‘हे राम जग में दो ही सुन्दर काम’ जैसी मीठी धुनें जब हवा में तैरने लगीं, तो यह सिर्फ संगीत नहीं था—यह एक ऐसा भाव था जिसने पूरे नगर को भक्ति, उत्साह और श्रद्धा की नई लहर से भर दिया। नगर निगम के जनसंपर्क अधिकारी मुकेश कुमार पांडेय ने बताया कि यह पहल केवल आयोजन

का हिस्सा नहीं, बल्कि रामनगरी में आने वाले लाखों श्रद्धालुओं को आध्यात्मिकता से जोड़ने का एक प्रयास है। उनकी बातों में वह आत्मविश्वास साफ झलकता था जो शहर के इस ऐतिहासिक माहौल को और खास बना देता है। अमानीगंज स्थित कंट्रोल रूम में सुबह साढ़े दस बजे वह क्षण आया जब महापौर महंत गिरीशपति त्रिपाठी और नगर आयुक्त जयेंद्र कुमार ने बटन दबाकर इस पहल का शुभारंभ किया। कंट्रोल रूम में उपस्थित हर अधिकारी और कर्मचारी ने जैसे ही स्पीकरों में उठती पहली धुन सुनी, चेहरे पर एक अद्भुत संतोष दिखाई देने लगा। उसी क्षण से अयोध्या की गलियों, बाजारों और मंदिरों में रामधुनें फैलने लगीं, और कुछ ही मिनटों में शहर के हर कोने में भक्ति का रंग गहरा हो गया। महापौर स्वयं बाद में उदया चौराहे पर पहुँचे और वहां प्रसारण की गुणवत्ता और लोगों की प्रतिक्रिया को देखा—लोगों के चेहरों पर प्रसन्नता, दुकानदारों के कानों में गूंजती मधुर धुनें, और बच्चों के बीच उठती उत्सुकता जैसे इस योजना की सफल शुरुआत का प्रमाण थीं।

महापौर ने कहा कि अयोध्या केवल ईंट-पत्थर का शहर नहीं, बल्कि भारत की आस्था का केंद्र है। यहाँ आने वाला हर यात्री अपने भीतर एक उम्मीद लेकर आता है—शांति, भक्ति और सुकून की तलाश। रामधुनों का यह प्रसारण इसलिए शुरू किया गया है ताकि हर श्रद्धालु को पहली ही धड़कन में यह महसूस हो कि वह भगवान राम की धरती पर खड़ा है। उन्होंने कहा कि यह ध्वनि-मंडल किसी संगीत कार्यक्रम के लिए नहीं, बल्कि उस आध्यात्मिक अनुभूति के लिए है जो अयोध्या की आत्मा का मूल है। नगर आयुक्त जयेंद्र कुमार ने बताया कि नगर निगम की यह पहल केवल एक आयोजन तक सीमित नहीं रहेगी।

“शादी की खुशियाँ बनीं चीखों का कोलाहल: आर्केस्ट्रा विवाद में दुल्हन के भाई की चाकू से हत्या, सारण में मातम”

(जीएनएस)। सारण जिले के मढ़ौरा थानाक्षेत्र के भावलपुर गांव में सोमवार की रात वह दृश्य था जिसे हर कोई एक पवित्र, हँसी-ठिठोली से भरे शादी समारोह के रूप में याद रखना चाहता है। रोशनियों से चमकते आँगन, सजाई गई कुर्सियाँ, पकड़-पकड़ कर खिलाए जाने वाले पकवान, और मंच पर बजता आर्केस्ट्रा—सब कुछ वैसा ही था जैसा किसी भी ग्रामीण शादी में होना चाहिए। लेकिन इन खुशियों की लय अचानक टूट गई, जैसे किसी ने पूरे वातावरण के बीच से संगीत की तारें खींचकर फेंक दी हों। रात की नमी में जब चीखें तैरनी शुरू हुईं, तब किसी ने नहीं सोचा था कि यह रात एक खौफनाक मोड़ लेने वाली है।

दुल्हन का भाई, रिंकु कुमार—एक ऐसा युवक जो अपनी बहन की शादी का दिन शायद बचपन से देखता आया था—भीड़ में इधर-उधर कामकाज देखता हुआ मौजूद था। आर्केस्ट्रा का कार्यक्रम अपने पूरे शोर-शराबे के साथ चल रहा था, जहाँ नर्तकियों की प्रस्तुति पर लोग तालियाँ बजा रहे थे। इसी बीच कुछ युवकों ने कलाकारों के साथ अश्लील हरकतें शुरू कर दीं। रिंकु ने, शायद अपनी बहन की इज्ज़त और परिवार की प्रतिष्ठा के बारे में सोचते हुए, उन लोगों को रोका। यह एक सामान्य रोक-टोक हो सकती थी, लेकिन उस रात यह टकराव हिंसा की आग में बदल गया।

कहते हैं कुछ पल ऐसे होते हैं जो पूरी जिंदगी के रास्ते बदल देते हैं। विवाद बढ़ा, आवाजें तेज़ हुईं, और अचानक भीड़ के बीच से चाकू चमका। कौन वार कर रहा था, किस पर वार हो रहा था—इस अफरा-तफरी में कोई समझ नहीं पाया। जब तक लोगों ने होश संभाला, रिंकु खून से लथपथ जमीन पर गिर चुका था। शादी का मंच, जो कुछ मिनट पहले हँसी और तालियों का गवाह था, अब मौत के सन्नाटे से भर गया। परिजनों की चीखें, महिलाओं का रोना और पुरुषों का स्तब्ध खड़ा रह जाना—इन सबके बीच रिंकु की सांसें वहीं थम गईं। घटना की खबर फैलते ही गांव में तनाव की लहर दौड़ गई। सड़कें लोगों से भरने लगीं, गुस्सा और भय का मिला-जुला भाव फैला हुआ था। स्थिति को नियंत्रित करने के लिए ग्रामीण एसपी संजय कुमार, एसडीपीओ नरेश पासवान और आसपास के कई थानों की पुलिस मौके पर पहुँच गई। पुलिस ने भीड़ को शांत कराया, परिजनों को समझाया और माहौल को काबू में लिया।

12 राज्यों में मतदाता पुनरीक्षण ने पकड़ी रफ्तार 99% गणना प्रपत्र वितरित, डिजिटाइजेशन भी तेज

(जीएनएस)। नई दिल्ली। देशभर में चल रहा विशेष गहन पुनरीक्षण अभियान एक महत्वपूर्ण चरण में प्रवेश कर चुका है। चुनाव आयोग के अनुसार इस प्रक्रिया की शुरुआत को बीस दिन से थोड़ा अधिक समय बीता है और इसी अवधि में 12 राज्यों व केंद्र शासित प्रदेशों में 99.07% मतदाता विशिष्ट गणना प्रपत्रों का वितरण पूरा हो चुका है। यह अभियान आगामी चुनाव चक्र से पहले मतदाता सूची को अधिक सटीक और आधुनिक बनाने के प्रयासों का अहम हिस्सा माना जा रहा है।

गोवा और लक्षद्वीप ने सबसे पहले 100% वितरण का लक्ष्य हासिल किया। इनके बाद अंडमान-निकोबार में वितरण 99.98%, मध्य प्रदेश में 99.83%, पश्चिम बंगाल में 99.75% और गुजरात में 99.69% तक पहुंच गया। चुनाव आयोग ने यह भी स्पष्ट किया कि अंडमान-निकोबार और पश्चिम बंगाल के आंकड़ों में पिछले 24 घंटों के दौरान कोई बदलाव नहीं हुआ।

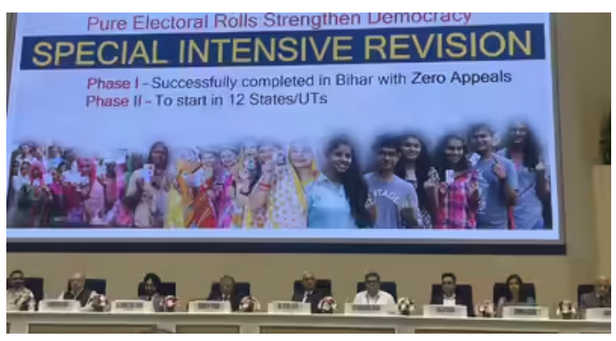

सबसे ज्यादा मतदाताओं वाले उत्तर प्रदेश में भी 99.62% प्रपत्र वितरित किए जा चुके हैं। राज्य में 15.44 करोड़ से अधिक पंजीकृत मतदाता हैं, जिसके चलते यहां की प्रगति को अभियान की सफलता का बड़ा संकेत माना जा रहा है। दक्षिण भारत में पुडुचेरी में यह आंकड़ा 95.58%, तमिलनाडु में 96.22% और केरल में 97.33% तक पहुंचा है।

विशेष गहन पुनरीक्षण प्रक्रिया अंडमान-निकोबार, गोवा, गुजरात, छत्तीसगढ़, केरल, मध्य प्रदेश, राजस्थान, तमिलनाडु, पुडुचेरी, लक्षद्वीप, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल में चल रही है। इन राज्यों में कई जगह विधानसभा चुनाव नजदीक हैं, इसलिए मतदाता सूची की शुद्धता को लेकर आयोग विशेष सतर्कता बरत रहा है। 4 नवंबर से शुरू हुई इस कार्रवाई में अब तक देश के 50.97 करोड़ मतदाताओं में से 50.50 करोड़ को फॉर्म पहुंचा दिया गया है। इसके समानांतर चल रही ऑनलाइन अपलोडिंग प्रक्रिया भी गति पकड़ रही है। अब तक 24.13 करोड़ से अधिक फॉर्म डिजिटाइज किए जा चुके हैं, जिससे कुल डिजिटाइजेशन दर 47.35% पर पहुंच गई है। इस ऑनलाइन प्रक्रिया में लक्षद्वीप सबसे आगे है जहां 96.81% फॉर्म अपलोड हो चुके हैं। इसके बाद गोवा 76.89% और राजस्थान 72.20% के साथ क्रमशः दूसरे और तीसरे स्थान पर हैं।

हालांकि कई राज्यों में प्रगति संतोषजनक है, लेकिन केरल इस मामले में सबसे पीछे है जहां अब तक केवल 23.72% फॉर्मों का डिजिटाइजेशन हो सका है। उत्तर प्रदेश में यह दर 26.60% दर्ज की गई। चुनाव आयोग ने सभी राज्यों को निर्देश दिया है कि वे प्रक्रिया को और तेज करें ताकि 2025–26 के चुनाव चक्र से पहले मतदाता सूची पूरी तरह अद्यतन और त्रुटिरहित रूप में उपलब्ध कराई जा सके।

“बैंकों के 1.6 अरब डॉलर घोटाले में बड़ा मोड़: संदेसरा भाइयों को सुप्रीम कोर्ट से राहत का संकेत, रकम चुकाने पर हट सकते हैं आपराधिक आरोप”

(जीएनएस)। 2017 में जब उद्योग जगत अपने आपको तेज़ी से बदलती वैश्विक अर्थव्यवस्था के अनुरूप ढालने में व्यस्त था, उसी वर्ष एक ऐसी घटना घटित हुई जिसने भारतीय बैंकिंग प्रणाली के भीतर छुपी कई परतों को उजागर कर दिया। नितिन और चेतन संदेसरा, जो कभी भारतीय कॉर्पोरेट जगत में ऊर्जा और फार्मा के चमकते सितारे माने जाते थे, अचानक देश छोड़कर निकल गए। उनके प्रस्थान ने न केवल वित्तीय संस्थानों को हिलाकर रख दिया, बल्कि भारतीय जांच एजेंसियों को भी एक ऐसे पीछा-यात्रा पर धकेल दिया जो वर्षों तक जारी रही। दोनों भाइयों पर आरोप था कि उन्होंने भारतीय बैंकों से लिए गए कर्ज का दुरुपयोग कर 1.6 अरब डॉलर का नुकसान पहुँचाया। इन आरोपों की गंभीरता का अंदाज़ा इसी बात से लगाया जा सकता है कि 2018 में उन्हें भगोड़ा आर्थिक अपराधी कानून के तहत उस सूची में शामिल किया गया जिसमें पहले से विजय माल्या और नीरव मोदी जैसे नाम दर्ज थे।

संदेसरा भाइयों के खिलाफ आरोप केवल

वित्तीय अनियमितताओं तक सीमित नहीं थे। जांच एजेंसियों का दावा था कि उन्होंने विदेशों में शाही पार्टियों, फर्जी निवेशों और जटिल कॉर्पोरेट संरचनाओं के माध्यम से पैसों का प्रवाह ऐसी दिशा में मोड़ा जिससे भारतीय बैंक प्रणाली को भारी क्षति हुई। मामला जितना कानूनी था, उतना ही राजनीतिक, आर्थिक और अंतरराष्ट्रीय संबंधों से भी जुड़ा हुआ था, क्योंकि संदेसरा समूह की नाइजीरिया स्थित कंपनी—स्टर्लिंग ऑयल एक्सप्लोरेशन एंड एनर्जी प्रोडक्शन—खुद उस देश के कुल संघीय राजस्व में लगभग 2.5 प्रतिशत योगदान देती है। यह वही विरोधाभास था जिसने इस पूरे मामले को और जटिल बना दिया—भारत में जिन पर घोटाले का आरोप, विदेश में वे अब भी एक बड़े आर्थिक ढांचे के संचालक बने हुए।

सालों तक खिंचती जांच, अदालतों में लगातार पेशियाँ, और दूसरे आर्थिक अपराधियों के मामलों के साथ की जाने वाली तुलना—यह सब मिलकर इस केस को भारतीय न्याय व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण उदाहरण बनाते गए। लेकिन बीते दिनों सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई के दौरान इस कहानी ने एक नया मोड़ लिया। अदालत में दोनों भाइयों के वकील मुकुल रोहतगी ने यह घोषणा की कि उनका मुवक्किल परिवार लगभग 570 मिलियन डॉलर—यानी कुल कथित बकाया का एक-तिहाई—चुकाने को तैयार है। यह एक संकेत था कि शायद वर्षों से अटका हुआ यह मामला समझौते की ओर बढ़ सकता है। सुप्रीम कोर्ट ने इस बयान को गंभीरता से लेते हुए कहा कि यदि संदेसरा भाई निर्धारित हिस्से की राशि जमा कर देते हैं, तो उनके खिलाफ लगे आपराधिक आरोप हटाए जा सकते हैं। यह बयान मात्र एक कानूनी राहत नहीं था, बल्कि एक बड़ी सिद्धांतात्मक बहस का द्वार भी खोल रहा था—क्या आर्थिक अपराधों में समझौता मॉडल भविष्य में बड़े घोटालों को सुलझाने का माध्यम बन सकता है? क्या बैंकों की वसूली और कानूनी प्रक्रियाओं के बीच कोई संतुलित रास्ता निकल सकता है? अदालत ने अपनी दृष्टि स्पष्ट करते हुए 17 दिसंबर तक की समयसीमा तय कर दी। इस तारीख तक यदि धनराशि जमा हो जाती है, तो मामला संभवतः नया मोड़ ले लेगा; और यदि राशि जमा नहीं होती, तो संदेसरा भाइयों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई पहले की तरह जारी रहेगी।